हिन्दी वर्कशीट
(Level-1)
कक्षा–9

Hindi Manual for Std.9

समझ के साथ पढ़ना

आप तो जानते ही होंगे किसी भी पाठ/कहानी को जल्दी और सही पढ़ना, पढ़कर समझने का एक चरण है। पाठ/कहानी पढ़कर समझने के लिए उस पाठ/कहानी को निजी ज़िंदगी और पूर्व अनुभवों से जोड़ना ज़रूरी होता है। इसलिए कहा जाता है कि लिखित भाषा को ही नहीं बल्कि उसके अर्थ को समझना 'पढ़ना' कहलाता है।

क्या हमारे विद्यालयों के प्रत्येक बच्चे के पढ़ने और सीखने का स्तर उसकी कक्षा के अनुसार है? अगर ऐसा नहीं है, तो सवाल यह पैदा होता है कि अगर उनका आधार ही कमज़ोर है तो वे अपनी कक्षा के अन्य विषयों को कैसे पढ़ पाएँगे और पढ़कर कैसे समझ पाएँगे? अत: ज़रूरत इस बात की है कि उनकी आधारभूत दक्षता को बढ़ाने के लिए कुछ विशेष गतिविधियाँ लगातार की जाएँ ताकि वे किसी भी पाठ/कहानी को पढ़कर समझ सकें, आलोचनात्मक ढंग से सोच सकें और किसी भी विषय पर अपनी सोच मौखिक व लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकें। इसके लिए कक्षा में उनके साथ हर रोज़ कहानी/पाठ पर बातचीत करनी होगी और उनका शब्दभण्डार बढ़ाना होगा। हर रोज़ लेखन की गतिविधियाँ कराई जाएँ ताकि उनकी लेखन क्षमता बढ़ सके। इस उम्र के बच्चों को कोई भी पाठ पढ़ कर समझ आ जाए, इसके लिए जरूरी है कि जिस विषय पर पाठ लिखा गया है, उसके बारे में पहले से कुछ पता हो। इसे हम पूर्व ज्ञान कहते हैं। यह इसलिए आवश्यक है क्योंकि कई बार बच्चा सही तरीके से पाठ पढ़ तो लेता है, परन्तु उसके बारे में कुछ भी पता न होने की वजह से वह कुछ समझ नहीं पाता। जब भी बच्चों के साथ 'पढ़ कर समझने की क्षमता' पर काम किया जाए, तो आवश्यक है कि उन्हें विषय ज्ञान/जगत ज्ञान आदि के माध्यम से कार्य करवाए जाएँ। ध्यान रखें कि इस उम्र के बच्चों का अनुभव काफ़ी ज़्यादा होता है। यह अनुभव उनके शैक्षिक उपलब्धियों में नहीं झलकता है क्योंकि बच्चा उस पाठ/कहानी में निहित अर्थों को ही समझ नहीं पाता।

पढ़ कर समझने की क्षमता बढ़ाने के लिए तीन गतिविधियाँ आवश्यक हैं :

1. पाठन, 2. लेखन, 3. शब्द भण्डार

1. कहानी/पाठ को पढ़ना :

किसी भी कहानी/पाठ को उचित गति से पढ़ना ताकि अर्थ भी समझ में आ जाए- यह ज़रूरी है। साथ ही साथ, यह भी आवश्यक है कि बच्चा किसी भी कहानी/पाठ को उचित हाव-भाव के साथ पढ़ सके। इसका अर्थ यह है कि पढ़ते समय ही बच्चे को पता हो कि कहानी में अलग-अलग भाव कौन से हैं और *उन्हें कैसे दर्शाते हैं।* कहानी/पाठ को हाव भाव से पढ़ने से पढ़ कर समझने की क्षमता का विकास होता है।

2. लेखन :

लेखन बच्चों के लिए एक बहुत रोचक गतिविधि है। बच्चे जो कहना चाहते हैं, *उसे व्यक्त करने के लिए वे लिखते हैं।* लिखते समय बच्चे कुछ परेशानियों से जूझते हैं। आपने देखा होगा कि :-

1. बच्चों में लिखने की क्षमता स्वचालित न होने से उनकी अल्पकालिक स्मृति (Short term memory) केवल लिखने की क्रिया पर ही केन्द्रित हो जाती है और वह आयोजन, आलेखन व पुन: निरीक्षण पर ध्यान नहीं दे पाते।
2. बच्चे अक्सर लिखने का उद्देश्य समझ नहीं पाते।

3. बच्चे अक्सर सारी जानकारियों लिख नहीं पाते।

4. अक्सर बच्चे वही लिखते हैं जो वे बोलते हैं। वे पढ़ने वाले को ध्यान में रखकर नहीं लिखते।

5. वे अपने लेखन का पुन: निरीक्षण बहुत कम ही करते हैं।

लेखन की जाँच करते समय बच्चों की मदद इस तरह करें :

अच्छे लेखन के दो भाग हैं: विषय-वस्तु और क्रमबद्धता। विषय-वस्तु का अर्थ है कि आप जिस विषय पर लिखना चाहते हैं, उस विषय से संबंधित विचारों की व्यवस्था। क्रमबद्धता से मतलब है जो कुछ भी लिखा गया है उसमें वाक्य संरचना का सही उपयोग, वाक्यों में तालमेल, उचित जगहों पर विराम चिह्न लगाना और मात्राओं का सही इस्तेमाल करना आदि। किसी भी विषय पर लिखने के बाद उसे पढ़कर पुन: विषय-वस्तु और क्रमबद्धता की जाँच करना बच्चों की लेखन क्षमता को और भी बेहतर बनाता है। इसलिए जब बच्चे लिख लें तब उन्हें निम्नलिखित विशेषताएँ स्वयं जाँचने के लिए प्रेरित करें :

- उन्होंने जो लिखा है, क्या उसका क्रम सही है?
- जो वाक्य लिखे गए हैं, क्या उनमें कोई सम्बन्ध नज़र आ रहा है?
- क्या वर्तनी, मात्राएँ आदि सही हैं?
- क्या विराम चिन्हों और शब्दों का उचित प्रयोग किया गया है?

अपने लेखन की स्वयं जाँच करने और उसे पुन: ठीक करने के लिए बच्चों को प्रेरित करें। इस पूरी प्रक्रिया को समझने और इस्तेमाल करने के लिए शिक्षक बच्चों को प्रेरित करें और उनकी मदद करें।

'पढ़ने' और 'लिखने' की क्षमताएँ एक दूसरे से जुड़ी हैं।

पहले 'पढ़ने' और 'लिखने' की क्षमताओं को अलग-अलग माना जाता था। स्कूल के अध्यापक मानते थे कि पहले पढ़ने की क्षमता का विकास होना चाहिए और उसके बाद लिखने की क्षमता का। परन्तु 'पढ़ना' और 'लिखना' एक दूसरे से अलग नहीं है। दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

पढ़ने का प्रभाव लिखने की क्षमता पर पड़ता है और लिखने का प्रभाव पढ़ने की क्षमता पर। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। पढ़ने से बच्चे बेहतर लिख पाते हैं और लिखने से पढ़े हुए पाठ को बेहतर समझ पाते हैं। पढ़े हुए पाठ के बारे में लिखने से वह पाठ को अपने जीवन और अपने अनुभव के साथ बेहतर ढँग से जोड़ पाते हैं।

3. शब्द भण्डार:

शब्द भण्डार का सीधा सम्बन्ध पढ़ने और समझने से है। कोई भी पाठ अच्छी तरह समझ पाने के लिए, उस में दिए गए शब्दों में से अधिकांश शब्द पाठक को पहले से पता होने चाहिए। ऐसा होने पर पाठक आसानी से समझ पाएगा कि पाठ में मुख्य रूप से क्या बताया गया है। साथ ही साथ, वह अब तक अपरिचित रहे शब्दों के अर्थों का अनुमान भी लगा पाएगा।

किसी भी शब्द को पूरी तरह समझने के लिए यह बात समझना जरूरी है कि उसका मूल अर्थ क्या है और किस प्रकार वह अलग-अलग सन्दर्भों में बदलता है।

बच्चों में उपरोक्त क्षमता विकसित करने के लिए वर्कशीट सहित कुछ पठ्नसामग्री दी जा रही हैं। जिसकी मदद से बच्चे पढ़ने और लिखने का अभ्यास करेंगे।

इस पठ्न सामग्रियों को 3 milestones में बाँटा गया है। पहले milestone में ऐसी कहानियाँ/पाठ हैं जिनकी भाषा बहुत ही सरल है और जो बच्चों के परिवेश से जुड़ी हुई है। इस भाग में कुल 6 पाठ हैं। इनमें से एक पाठ, 'दादाजी की छींक' को बच्चों की सहुलियत के लिए हल कर दिया गया है। इसी हल किये हुए पाठ/कहानी को ध्यान में रखकर अगले पाँच पाठों को हल करने के लिए बच्चों से कहें। Milestone 2 में पहले भाग कि तुलना में थोड़े कठिन पाठ/कहानी हैं। तीसरे भाग के पाठ और वर्कशीट कक्षा 9 के स्तर के हैं।

उपरोक्त तीनों milestones की वर्कशीट की रूपरेखा निम्नलिखित है:-

Milestone 1	Milestone 2	Milestone 3
दादाजी की छींक अनपढ़ नानी निबंध की कॉपी समझदार रानी अनाज के खेत में चिड़िया आत्मविश्वास	साहस कथा काठ का कटोरा हौसला धागे से कपड़े तक चम्मच, चमचा और चमचागिरी	चाँद और हॉकी आइए शुरू करें तेरी शहनाई बोले अक्षरों का इतिहास उस्ताद की बात दु:ख का अधिकार धर्म की आड़
अन्य पाठ : पत्र	**अन्य पाठ :** प्रतिवेदन	**अन्य पाठ :** निबंध
प्रश्न की रूपरेखा तथ्य आधारित अनुमानिक शब्दकोश विचार/राय/विस्तार/संक्षिप्त व्याकरण	**प्रश्न की रूपरेखा** तथ्य आधारित अनुमानिक शब्दकोश विचार/राय/विस्तार/संक्षिप्त व्याकरण	**प्रश्न की रूपरेखा** तथ्य आधारित अनुमानिक शब्दकोश विचार/राय/विस्तार/संक्षिप्त व्याकरण बहु-विकल्पीय प्रश्न

कक्षा में की जाने वाली गतिविधियाँ

I. पढ़ने से पूर्व - किसी भी कहानी/पाठ को पढ़ने से पहले, बच्चों से कहें कि वह शीर्षक और चित्र देख कर अनुमान लगाएँ कि कहानी/पाठ में क्या होगा। यह कार्य बच्चे समूह में करें और फिर हर समूह अपने-अपने अनुमान को पूरी कक्षा के सामने प्रस्तुत करे। सूचनात्मक पाठ के लिए 'मुझे क्या पता है' और 'मुझे क्या पता करना है' पर बच्चों से चर्चा करें।

मुझे क्या पता है?	मुझे क्या पता करना है?

बच्चों को चर्चा करके लिखने के लिए कहें और फिर पूरी कक्षा के सामने प्रस्तुत करने के लिए कहें।

II. पढ़ने के दौरान - जब बच्चे अनुच्छेद पढ़ लें, तब कहानी पर बातचीत शुरू करें। इस के लिए कक्षा में 3 गतिविधियाँ ज़रूर करें :-

1. **बातचीत/चर्चा** - शिक्षक बच्चों को समूह में बाँटे और अपने-अपने प्रश्न बनाने को कहें। फिर हर समूह अपने-अपने प्रश्न दूसरे समूह के बच्चों से पूछे।

कुछ खास प्रकार के प्रश्न जो बच्चों को पाठ को समझने, अपने जीवन से जोड़ने, अपनी बातों को विस्तार से बताने और उनकी दक्षताओं को बेहतर करने में मदद करें, नीचे दिए गए हैं :-

- ऐसे प्रश्न जिनसे तथ्य या जानकारी प्राप्त हों।
- ऐसे प्रश्न जो बच्चों को सोचने पर मजबूर करें।

- ऐसे प्रश्न जो बच्चों से अपरिचित शब्द, मुहावरे आदि का उपयोग अलग-अलग संदर्भों में कराएं।
- ऐसे प्रश्न जो बच्चों से पाठ/कहानी में दी गई किसी बात पर उनकी राय माँगें।
- ऐसे प्रश्न जो उनको किसी बात/जानकारी को विस्तार/संक्षिप्त से बताने के लिए प्रेरित करें।

2. किसी भी कहानी/पाठ में दी गई जानकारी को समझने के लिए, उसे चित्रित रूप में लिखने से पढ़कर समझने की क्षमता विकसित होती है। चित्रित रूप में पाठ की जानकारियों को नियोजित करने के चार तरीके हैं :-

(क) किसी भी एक चीज़ पर ध्यान केंद्रित कर उससे जुड़ी सभी बातों का विवरण लेना, पढ़ कर समझने की क्षमता को बढ़ाता है। (यह अधिकतर सूचनात्मक पाठ में किया जाता है।)

उदाहरण

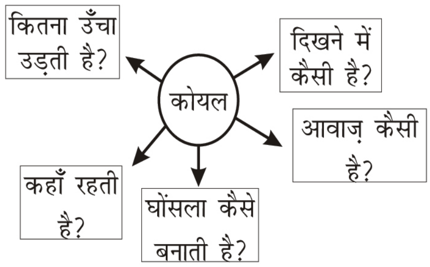

(ख) कोई भी कहानी/पाठ पढ़ कर बच्चे सोचें कि कहानी/पाठ में दिए गए पात्र को कौन-सी परेशानी का सामना करना पड़ा और उस ने उसका क्या हल खोजा।

उदाहरण

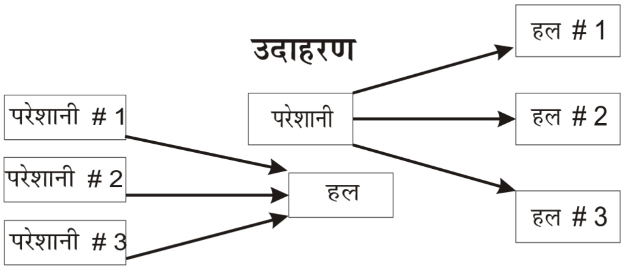

(ग) कहानी की घटनाओं को क्रमबद्ध तरीके से लिखें।

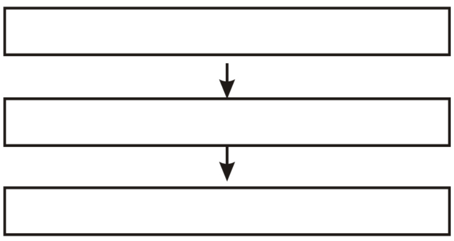

कहानी की घटनाएँ

(घ) अगर किसी के जीवन की घटनाओं को बताना हो तो timeline (समय सीमा) का उपयोग करें।

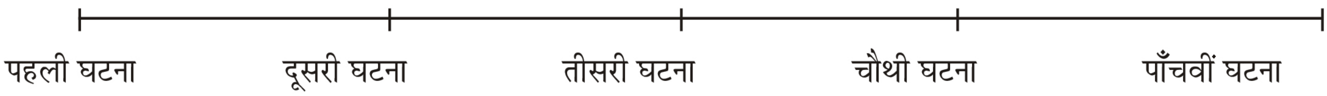

उपरोक्त चारों उदाहरण का इस्तेमाल हम किसी भी कहानी/पाठ के लिए कर सकते हैं।

3. शब्द भण्डार बढ़ाने के लिए माईण्ड मैपिंग : इस गतिविधि के लिए पूरी कक्षा को एक शब्द दें। उस शब्द को ब्लैक बोर्ड के बीचों बीच लिखें। फिर बच्चों से पूछें कि इस शब्द को पढ़कर उनके दिमाग़ में इससे सम्बंधित और कौन से शब्द याद आ रहे हैं? उन शब्दों को एक-एक करके ब्लैक बार्ड पर लिखें। एक शब्द का दूसरे शब्द से क्या सम्बन्ध है, बच्चों से पूछें।

उदाहरण

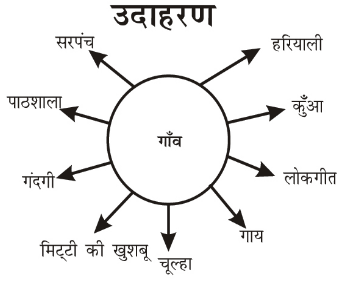

4. वर्कशीट पर कार्य - बच्चों को उनकी वर्कशीट के प्रश्न हल करने को कहें। यह कार्य बच्चे छोटे समूह में भी कर सकते हैं और व्यक्तिगत तौर पर भी।

वर्कशीट में शब्द भण्डार से सम्बंधित प्रश्न हैं। उसमें व्याकरण से जुड़े कुछ प्रश्न और उनकी परिभाषा भी शामिल है। हर वर्कशीट में तथ्य पर आधारित कुछ सवाल हैं, कुछ inference और कुछ अनुमान लगाने वाले और अपनी राय देने वाले प्रश्न हैं।

वर्कशीट में दिए गए कुछ पाठ कहानी के रूप में हैं और कुछ सूचनात्मक हैं। हर पाठ/कहानी के साथ मैनुअल में दी गई पद्धति के अनुसार गतिविधि की जा सकती है।

बच्चों के स्तर के अनुसार आप वर्कशीट/पाठ का इस्तमाल कर सकते हैं। ऊँचे स्तर के लिए Milestone 2 या 3 से शुरुआत कर सकते हैं।

दादाजी की छींक

हमारे पड़ोस में एक बुज़ुर्ग रहते हैं। हम उन्हें दादाजी कहते हैं। वे दिन में कम से कम हज़ार बार छींकते हैं। दादाजी की छींक तीन हिस्सों में पूरी होती है। पहले वे 'आः हा हा' चिल्लाकर मुँह खोलते हैं और आँखें बंद कर लेते हैं। फिर एक सैकण्ड के लिए शांति रहती है। उनकी छाती और पेट फूल जाते हैं। हाथ फैल जाते हैं। अग़ल–बग़ल के लोग अपना मुँह ढक लेते हैं या मुँह घुमाकर कानों पर हाथ रख लेते हैं या फिर दीवार को पकड़ कर खड़े हो जाते हैं। तभी 'अहहा... हात्छू' जैसी आवाज़ के साथ छींक सब जगह फुहार बरसा देती है। दादाजी की छींक से सारा घर हिल जाता है। फिर दादाजी ख़ुद ही 'हा... वाह! बहुत अच्छे। अह...ख' जैसी आवाज़ें निकालते हुए धोती से आँखें और नाक पोंछने लगते हैं।

छींक की शुरुआत कैसे होती है इस बारे में मैंने कहीं कुछ पढ़ा है। नाक के बालों को जब पानी या ठंडी हवा लगती है या कोई कण उन बालों को गुदगुदी करता है, बस छींक वहीं से शुरू होती है। दादाजी आँखें बंद करके मुँह खोलते हैं। तब तक दिमाग़ को संदेश मिल जाता है कि कोई अनचाही चीज़ नाक में है। उसे बाहर निकालना ज़रूरी है। दिमाग़, छाती तथा पेट की मांसपेशियों को आज्ञा देता है। दादाजी की छाती फूलती है और फिर हवा गले, नाक और मुँह के रास्ते छींक के रूप में बाहर निकल जाती है। और तब दादाजी को सुकून मिल जाता है। लेकिन क्या दादाजी को किसी ने अब तक यह नहीं बताया कि छींकते समय मुँह पर हाथ रखना चाहिए या कोहनी में मुँह छुपा लेना चाहिए?

– माधव चवान

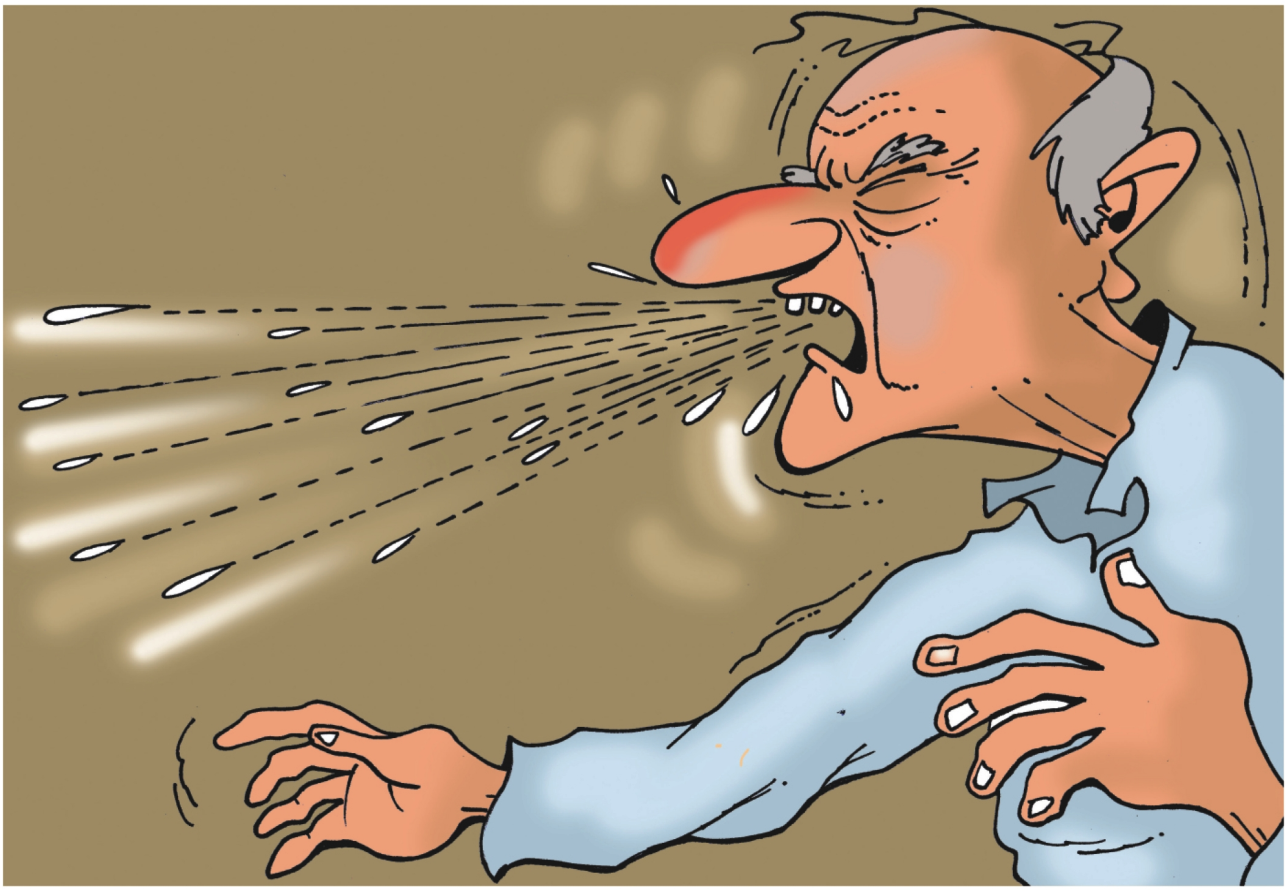

दादाजी की छींक

1. दादाजी की छींक के तीन हिस्से कौन से हैं?

१. पहले हिस्से में दादाजी 'आः हा हा' चिल्लाकर मुँह खोलकर आँखें बन्द कर लेते हैं।

२. दूसरे हिस्से में दादाजी की छाती और पेट फूल जाते हैं और हाथ फैल जाते हैं।

३. तीसरे हिस्से में 'अहहा-हात्छू' जैसी आवाज़ के साथ छींक फुहार बरसा देती है।

2. छींक आने पर शरीर में क्या–क्या बदलाव होते हैं?

छींक आने से पहले उनके नाक में गुदगुदी सी होती है।

उनकी छाती और पेट फूल जाते हैं।

उनकी आँखों व नाक से पानी निकलता है।

3. दादाजी के छींक मारने से पहले सब लोग क्या करने लगते हैं? आख़िर वह ऐसा क्यों करते हैं?

दादाजी के छींक मारने से आसपास के कुछ लोग अपना मुँह ढक लेते, कुछ लोग मुँह घुमाकर कानों पर हाथ रख लेते और कुछ लोग दीवार पकड़ कर खड़े हो जाते। वे ऐसा इसलिए करते ताकि दादाजी की छींक के छींटे उन पर न पड़े।

4. हमें छींक क्यों आती है?

नाक में बालों को जब ठण्डी हवा लगती है या कोई कण नाक के बालों को गुदगुदाता है तब हमारे दिमाग को पता चलता है कि कोई अनचाही चीज नाक में आ गई है तो छींक से उसे बाहर की ओर धकेला जाए।

5. ''छींक मार कर दादाजी को <u>सुकून</u> मिल जाता है।''
रेखांकित शब्द को इस तरह बदलें कि वाक्य का अर्थ न बदले।

छींक मार कर दादाजी को आराम मिल जाता है।

6. उनकी छींक सब जगह <u>फुहार बरसा देती है</u>।
रेखांकित वाक्यांश का अर्थ विस्तार से अपने शब्दों में लिखें।

दादाजी की छींक फुहार बरसा देती है यानि उनकी छींक के छींटें चारों ओर फैल जाते हैं।

7. दादाजी की छींक से सारा घर हिल जाता है। क्या सचमुच सारा घर हिल जाता होगा? अपने विचार लिखें।

दादाजी की छींक बहुत तेज़ होती थी जिससे लोग इधर उधर भागने लगते थे। कोई मुँह घुमा लेता था तो कोई अपने कान बन्द कर लेता था। हर कोई उसकी फुहार से बचना चाहता था। इसी वजह से एक हंगामा-सा मच जाता था मानों सारा घर ही हिल रहा हो।

8. आपको लगता है कि छींकते समय मुँह पर हाथ रखना ज़रूरी है? अपनी राय दें।

जी हाँ, छींकने से हमारे नाक व मुँह से कुछ छींटे निकलती हैं। यदि वे किसी दूसरे व्यक्ति पर पड़ती है तो उसे जुकाम हो सकता है। इनसे बचने के लिए मुँह पर हाथ रखकर छींकना ज़रूरी है। साथ ही साथ छींकते समय मुँह खुला रहता है और उस समय कोई बाहरी वस्तु अन्दर न घुस जाए उससे बचने के लिए छींकते समय मुँह पर हाथ ज़रूर रखना चाहिए।

9. इस कहानी में आपको सबसे मज़ेदार क्या लगा? मज़ेदार क्यों लगा कारण भी बताएँ।

मुझे दादाजी के छींक मारने का तरीका बहुत मज़ेदार लगा विशेष कर उनकी छींक के तीन भाग। लेखक ने जिस तरह से छींक के तीनों भागों को विस्तार से बताया है, वह मुझे मज़ेदार लगा।

10.क्या आप दादाजी के जैसे किसी बुजुर्ग को जानते हैं? उनके बारे में कोई मज़ेदार क़िस्सा लिखें।

जी हाँ, मेरे एक मामा जी हैं। उनका नाम रमेश भारती है। मामाजी भी कुछ इस कहानी के दादाजी की तरह ही छींकते हैं। उनकी उम्र ४० वर्ष है। वह गाँव में रहते हैं। जब वह छींकते हैं तो इतनी ज़ोर से छींकते है कि आसपास बैठे सभी लोग बुरी तरह डर जाते हैं, ऐसा लगता है मानो कोई तोप का गोला छोड़ा गया हे या कोई बम फट गया है। अगले ही पल उनकी छींक खत्म होते ही सब ज़ोर से हँसने भी लगते हैं।

या

जी हाँ, मेरे पिताजी भी कुछ ऐसे ही हैं। ज़ोर से छींक तो नहीं परन्तु उनके खर्राटों की आवाज़ दिल को दहला देती है। रात के सन्नाटे में जब अचानक खर्र-खर्र की लम्बी आवाज़ के साथ-साथ बारीक सीटी जैसी आवाज़ आती है तो लगता है कि किसी आवाज़ करती, सीटी मारती भागती ट्रेन में सफर कर रहे हों। कानों में रुई डालने से भी कोई फायदा नहीं होता। लाख कोशिश कर ली पर उनके खर्राटे नहीं रुके।

11. ***''हमारे पड़ोस में एक बुज़ुर्ग रहते हैं। हम उन्हें दादाजी कहते हैं''***

कहानी के इन वाक्यों में पड़ोस, बुजुर्ग और दादाजी संज्ञा हैं। यह संज्ञा क्या है?

किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु तथा भाव का बोध कराने वाले शब्द को संज्ञा कहते हैं।

उदाहरण : ''**राजेश** (व्यक्ति) जब **रेलगाड़ी** (वस्तु) से **शिमला** (स्थान) गया तो उसे बहुत **प्रसन्नता** (भाव) हुई।''

इस वाक्य में, 'राजेश', 'रेलगाड़ी', 'शिमला' और 'प्रसन्नता' सभी संज्ञा के उदाहरण हैं। इसके कुछ और उदाहरण इस प्रकार है : मुँह, हाथ, दीवार, पड़ोस, आँखें, कान, दिल्ली, ताजमहल, शेर, बिल्ली, पटना, दोस्त, साथी आदि।

'दादाजी की छींक' कहानी को पढ़ें व उसमें से ऐसे शब्दों को ढूँढकर लिखें जिन्हें संज्ञा कहा जाता है।

पड़ोस, दादाजी, मुँह, शांति, छाती, पेट, हाथ, आवाज़, घर, आँखें, नाम, पानी, मांसपेशियाँ, दिमाग़, हवा, कण, गला आदि।

अनपढ़ नानी

मेरी माँ अपने बचपन की एक घटना बताती हैं। इस घटना को बीते 60–65 साल हो गये होंगे। यह कहानी है मेरी नानी की। नानी अनपढ़ थीं। अनपढ़ यानी वह ना पढ़ना जानती थीं ना लिखना। उनके 9 बच्चे थे। वह अपने बच्चों को नौरत्न कहती थीं।

माँ का सबसे छोटा भाई नन्हा शिशु था तब की बात है। माँ तब 14–15 साल की रही होंगी। एक दिन नानी ने उस छोटे शिशु को नहलाया और तौलिये में लपेट कर कमरे में ले आईं। नानी ने उसे अपने पाँव पर उलटा लिटा लिया। उसके शरीर को पोंछकर अजवाईन वाला तेल लगाया और धूप से सेंका।

मेरी माँ को अपने छोटे भाई के सारे काम करने का बड़ा शौक़ था। उन्होंने तुरंत छोटे चम्मच में भाई की दवाई भरकर नानी को दी। कोई काढ़ा था। नानी चम्मच शिशु के मुँह में डालने वाली ही थीं, ''अरे यह क्या है? हमेशा वाली गंध नहीं है'', ऐसा कहकर उन्होंने चम्मच हटाया। वे बोलीं, ''बोतल लाओ। कहाँ से ली तुमने?'' नानी ने बोतल देखी तो वह कीड़े मारनेवाली दवाई थी। नानी बोलीं, ''हाय राम! तुम्हारी वजह से अभी अनर्थ हो जाता! सिर्फ़ पढ़ना आने से क्या हासिल होता है? पढ़ी हुई बात को समझना भी ज़रूरी है!''

– अलका रनाडे

अनपढ़ नानी

प्र 1. माँ उस घटना के समय कितने साल की थी?

प्र 2 नानी ने दवाई का चम्मच शिशु के मुँह से दूर क्यों किया?

प्र 3. 'बस पढ़ना आने से क्या होता है, पढ़ी हुई बात को समझना भी ज़रूरी है।' नानी ने ऐसा क्यों कहा? अपने शब्दों में लिखें।

प्र 4. अगर माँ शिशु को वह दवा पिला देती तो क्या होता? सोचकर लिखें।

प्र 5. नानी ने शिशु के शरीर को पोंछकर अजवाईन का तेल लगाया और धूप सेकने को क्यों छोड़ दिया? सोचकर अपने शब्दों में कारण लिखें।

प्र 6. 'मेरी माँ को अपने छोटे भाई के सारे काम करने का बड़ा **शौक़** था।'

रेखांकित शब्द को ऐसे शब्द से बदलें कि उसका अर्थ न बदले।

प्र 7. अगर आप ने कोई और ऐसी घटना के बारे में सुना है तो विस्तार से लिखें।

प्र 8. **मेरी** माँ को **अपने** छोटे भाई के सारे काम करने का बड़े शौक था। **उन्होंने** तुरन्त छोटे चम्मच में भाई की दवाई भरकर नानी को दी।

इन वाक्यों में रेखांकित शब्दों को समझने की कोशिश करते हैं। मेरी, अपने, उन्होंने ये सर्वनाम हैं। इससे साफ़ पता चलता है कि ये शब्द संज्ञा के बदले इस्तेमाल किए गए हैं। यानी संज्ञा के स्थान पर इस्तेमाल होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। कुछ और उदाहरण इस तरह हैं– मैं, हम, मुझे, हमारा, तू, तुम, तुझे, तेरा, तुम्हारा, वह, वे, उसने, यह, ये, इसने आदि।

'अनपढ़ नानी' कहानी को पढ़ें। इनमें जितने सर्वनाम शब्दों का इस्तेमाल किया गया है उन्हें ढूँढें और लिखें।

मज़ेदार बातें : जो सर्वनाम संज्ञा के स्थान पर आते ही हैं मगर उस वाक्य को प्रश्नवाचक भी बना देते हैं, वे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं जैसे– क्या, कौन आदि।

निबंध की कॉपी

सरिता को किताबें पढ़ने से ज़्यादा खेलना अच्छा लगता था। बातें करने को भी वह हमेशा तैयार रहती थी। लेकिन पढ़ना और लिखना, ना बाबा ना! इसलिए सरिता को अपनी निबंध की कॉपी से गहरी शत्रुता थी। उस दिन सभी विद्यार्थी शिक्षिका को अपना निबंध सुनाने वाले थे। सरिता हमेशा की तरह भूल गई थी कि उसे भी निबंध लिखना था। अब? लेकिन सरिता घबराई नहीं। अपनी बारी आने पर उसने एक बार शिक्षिका की ओर देखा और खड़ी हो गई। उसने कॉपी हाथ में पकड़ी और निबंध सुनाने लगी। शिक्षिका आश्चर्य से सुनती रही। कक्षा के अन्य विद्यार्थी भी दंग रह गए। सरिता के निबंध में लिखी बातों में बहुत मज़ा आ रहा था। अचानक उसकी दौड़ती गाड़ी रुक गयी। शिक्षिका को शक हुआ। उन्होंने कहा, ''कॉपी इधर लाना।'' सरिता ने कॉपी शिक्षिका को दे दी। शिक्षिका का शक सही निकला। कॉपी का पन्ना कोरा था। सरिता ने मन ही मन डाँट खाने की तैयारी कर ली। मगर हुआ कुछ और! शिक्षिका ने कहा, ''इतना सारा मन में रखती हो तो उसे काग़ज़ पर क्यों नहीं उतार देती?''

सरिता को झटका लगा। ''अरे यह तो सोचा ही नहीं'', उसके मुँह से निकला।

– अलका रनाडे

निबंध की कॉपी

प्र 1. कहानी से उन वाक्यों को छाँटें जिनसे पता चलता है कि सरिता का पढ़ने लिखने में मन नहीं लगता था?

प्र 2 सरिता को पढ़ाई के अलावा और क्या–क्या अच्छा लगता था?

प्र 3. ''इतना सारा मन में रखती हो तो उसे कॉपी पर क्यों नहीं उतारती'' क्या इस वाक्य का सरिता पर कोई प्रभाव पड़ा होगा? अपनी राय बताएँ।

प्र 4. पढ़ना लिखना क्यों ज़रूरी है? अपने विचार लिखें।

प्र 5. आपको क्या लगता है सरिता अगली बार निबंध लिखकर लाएगी ? अगर हाँ, तो क्यों?

प्र 6. सरिता के साथ जो हुआ क्या कभी कक्षा में आपके साथ भी ऐसा हुआ है। अपना वह क़िस्सा या घटना पाँच से छः वाक्यों में लिखें।

प्र 7. सरिता को अपनी निबंध की कॉपी से गहरी **<u>शत्रुता</u>** थी।

रेखांकित शब्द को इस तरह बदलें कि उसका अर्थ न बदले।

प्र 8. 'दंग रह जाना' मुहावरे का अर्थ समझाते हुए उससे वाक्य बनाएँ।

प्र 9. क्या आपका मन भी सरिता की तरह पढ़ाई में नहीं लगता? उसका कारण लिखें।

प्र 10. जिन संज्ञा शब्दों से पुरुष जाति का बोध हो या जो शब्द पुरुष जाति के अंतर्गत माने जाते है वे पुल्लिंग कहलाते हैं। जैसे– दिन, देश, हीरा, सोना, लड़का, घोड़ा आदि। कहानी से ऐसे शब्दों को ढूँढकर लिखें।

प्र 11. सरिता को किताबे **<u>पढ़ने</u>** से ज़्यादा **<u>खेलना</u>** अच्छा लगता था। सभी विद्यार्थी शिक्षिका को अपना निबन्ध **<u>सुनाने</u>** वाले थे।

पढ़ना, खेलना, सूनाने, क्रिया शब्द हैं जिन्हें इन वाक्यों में रेखांकित किया गया है।

क्रिया जानते हैं न? जिस शब्द या शब्दों के समूह के द्वारा किसी काम के होने या करने का बोध हो उसे क्रिया कहते हैं जैसे– खेलना, कूदना, भागना, नहाना, जाना, उड़ना, घूमना, हँसना आदि।

'निबंध की कॉपी' कहानी को पढ़ें व उनमें से क्रिया शब्दों को ढूँढें और लिखें।

समझदार रानी

रानी बहुत समझदार लड़की थी। वह अपने माता–पिता और छोटे भाई राजू के साथ रहती थी। राजू अभी केवल दो वर्ष का था। एक दिन रानी के माता–पिता को राजू को घर पर ही छोड़कर कहीं बाहर जाना पड़ा। उन्होंने रानी से अपने भाई का ध्यान रखने को कहा। रानी ने माँ को विश्वास दिलाते हुए कहा, ''आप चिंता न करें, मैं भाई का पूरा ध्यान रखूँगी।'' रानी के माता–पिता चले गए। रानी अपने भाई के साथ खेलने लगी परन्तु थोड़ी देर बाद ही राजू को बार–बार पतला मल आने लगा। वह तकलीफ़ से रोने लगा। रानी ने उसे चुप कराने की पूरी कोशिश की लेकिन राजू चुप नहीं हुआ।

तभी रानी को अपनी अध्यापिका की बात याद आई जिन्होंने पढ़ाते समय बताया था, ''दिन में तीन बार से अधिक पतला मल आना दस्त के लक्षण हैं। दस्त होने के दौरान शरीर में पानी और पोषक तत्त्वों की कमी हो जाती है। उस कमी को दूर करने के लिए ओ. आर. एस. (जीवन रक्षक घोल) का घोल देना चाहिए। फिर क्या था, रानी झट से पास की आँगनवाड़ी गई और ओ. आर. एस. का पैकेट ले आई। उसने पैकेट पर लिखे निर्देश के अनुसार घोल बनाकर राजू को थोड़ी–थोड़ी देर पर पिला दिया। राजू को थोड़ा आराम आया और वह सो गया। शाम में जब रानी के माता–पिता घर लौटे तो रानी ने उन्हें सारी बात बताई। रानी की बात सुनकर उसके माता–पिता बहुत ख़ुश हुए और रानी को गले लगा लिया।

– अन्जू

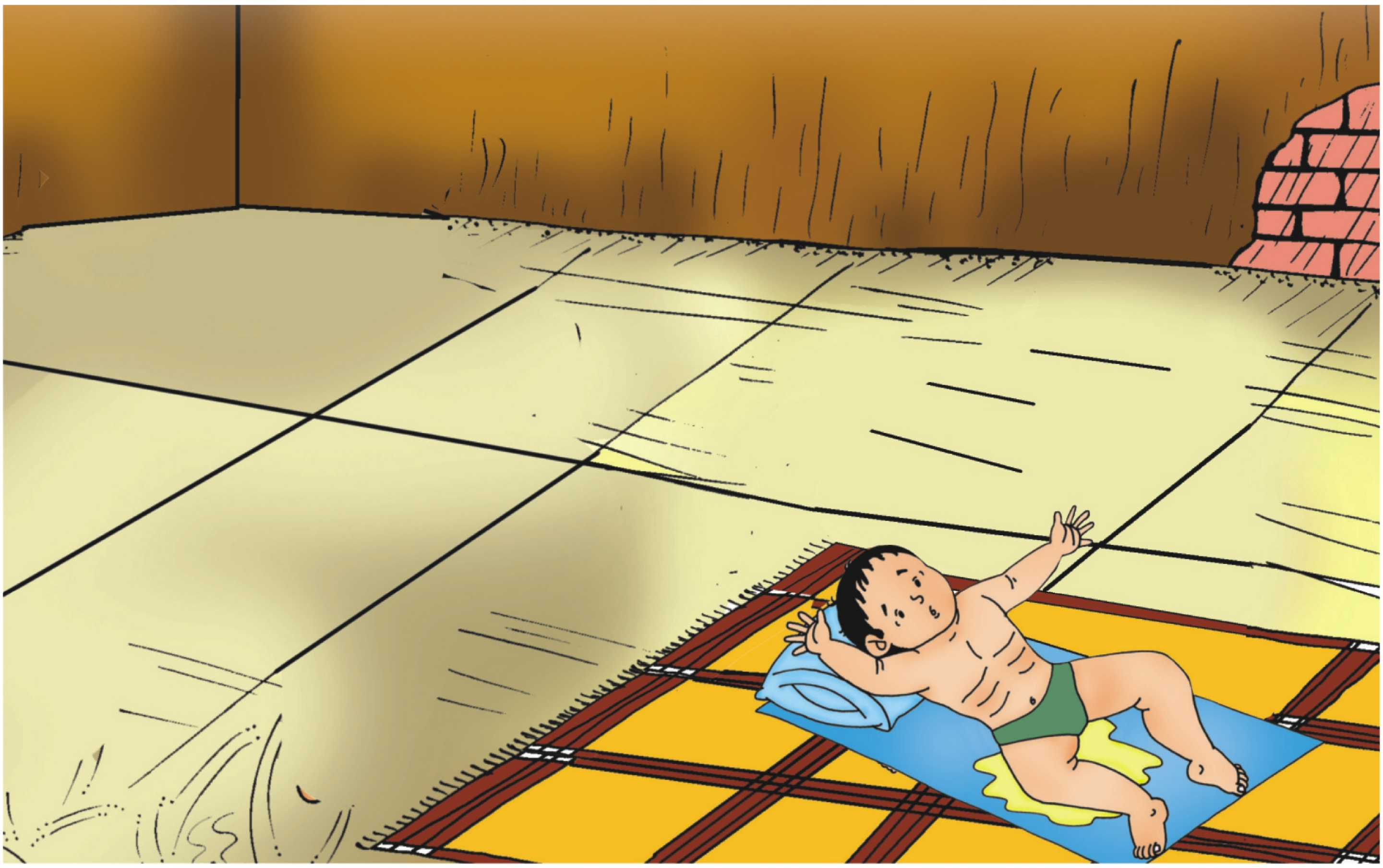

समझदार रानी

प्र 1. माँ–पिताजी ने रानी को क्या ज़िम्मेदारी सौंपी?

प्र 2 राजू को क्या तकलीफ़ थी?

प्र 3. रानी को अध्यापिका की कौन–सी बात याद आई?

प्र 4. रानी आंगनवाड़ी क्यों गई?

प्र 5. आप रानी की जगह होती तो क्या करती? अपनी राय बताएँ।

प्र 6. पतला मल आना दस्त के लक्षण हैं।

'लक्षण' शब्द का अर्थ विस्तार से अपने शब्दों में लिखें। अब इसी शब्द से एक नया वाक्य बनाएँ।

प्र 7. 'रानी ने उसे चुप कराने की पूरी कोशिश की लेकिन राजू चुप नहीं हुआ।'

रेखांकित वाक्यांश को इस तरह बदलें कि वाक्य का अर्थ न बदले।

प्र 8. इस कहानी में रानी को क्या परेशानी थी? उसका हल उसने क्या ढूँढा और उस हल का प्रभाव क्या हुआ?

परेशानी : ____________________

हल : ____________________

प्रभाव : ____________________

प्र 9. सारी बात सुन कर रानी के माता–पिता के मन पर क्या प्रभाव पड़ा? पाँच से छः वाक्यों में लिखें।

प्र 10. ***रानी बहुत समझदार लड़की थी।***

रानी अपने माता–पिता और छोटे भाई के साथ रहती थी।

समझदार, छोटे इनका इस्तेमाल इन वाक्यों में विशेषण के तौर पर किया गया है। इसका अर्थ है कि लड़की की एक विशेषता यहाँ बताई गई है और यह विशेषता है कि लड़की समझदार है।

इन उदाहरणों से साफ़ पता चलता है कि ये 'समझदार', 'छोटे' शब्द किसी संज्ञा/सर्वनाम शब्दों की विशेषता बता रहे हैं। अतः ये शब्द विशेषण हुए। कुछ ओर उदाहरण इस प्रकार हैं – बड़ा, लंबा, काला, गोरा, अच्छा, दयालू, खूबसूरत, घमण्डी, झगड़ालू, भारी आदि।

इस कहानी में विशेषण शब्द जहाँ–जहाँ इस्तेमाल हुए हैं, उन्हें ढूँढें और लिखें।

अनाज के खेत में चिड़िया

एक बार एक चिड़िया ने अनाज के खेत में अपना घोंसला बनाया। एक महीने बाद उसने घोंसले में अंडे दिए। कुछ दिनों के बाद अंडों में से चूज़े निकल आए। चूज़े सारा दिन घोंसले में चीं–चीं करते रहते। उनकी माँ रोज़ उनके लिए भोजन का इंतज़ाम करने के लिए सुबह सवेरे उड़कर जाती और थोड़ी ही देर में वापस लौटकर आती। इस तरह चूज़े बड़े होने लगे। एक दिन रोज़ की तरह चूज़े खेल रहे थे, उन्होंने खेत में किसान को यह कहते हुए सुना, "मेरी फ़सल पक गई है। इस फ़सल को काटने के लिए कल मैं अपने पड़ोसियों को लेकर आऊँगा।" चूज़े परेशान हो गए। शाम को जब उनकी माँ लौटकर वापस आई तो चूज़ों ने अपनी माँ से कहा, "माँ–माँ! आज किसान आया था। वह कह रहा था कि कल पड़ोसियों को लेकर आऊँगा और यह फ़सल कटवा दूँगा। माँ हमें डर लग रहा है कि हमारा घोंसला टूट गया तो हम कहाँ रहेंगे?"

"चिन्ता मत करो, कुछ नहीं होगा।" माँ ने शांत भाव से कहा।

अगले दिन फ़सल काटने कोई नहीं आया। चूज़े रोज़ की तरह खेल में लगे रहे।

दो दिन बाद किसान फिर से खेत पर आया और बोला, "इस फ़सल को काटने के लिए मैं अपने रिश्तेदारों को बुला

लूँगा।" चूज़े फिर से घबरा गए। शाम को उन्होंने माँ को बताया कि आज फिर किसान आया था और फ़सल काटने के लिए कह रहा था।

"मैंने कहा न, चिंता मत करो, कुछ नहीं होगा?" माँ ने कहा। अगले दिन भी फ़सल काटने कोई नहीं आया।

अगले दिन किसान अपने बेटे के साथ खेत में आया और अपने बेटे से कहने लगा, "बेटा हमारी फ़सल पक गई है। मैंने अपने पड़ोसियों और रिश्तेदारों से फ़सल काटने में सहायता करने के लिए कहा, पर किसी ने भी मेरी सहायता नहीं की। अब हमें स्वयं ही अपनी फ़सल काटनी होगी।"

बेटे ने कहा, "ठीक है पिताजी! हम कल मिलकर फ़सल काटेंगे।" शाम को जब चिड़िया वापस घर आई तब चूज़ों ने किसान और उसके बेटे की बात अपनी माँ को बताई। चिड़िया ने कहा, "बच्चो! अब हमारा यहाँ से जाने का समय आ गया है, क्योंकि जब कोई यह कहता है कि मैं स्वयं इस काम को करूँगा, तो वह अवश्य ही उस काम को पूरा करता है।"

साभार : राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली।

अनाज के खेत में चिड़िया

प्र 1. किसान ने फ़सल काटने के लिए किस–किस से मदद मांगी थी?

प्र 2. चिड़िया अपने बच्चों के लिए भोजन लाने किस समय जाती थी?

प्र 3. चिड़िया ने बच्चों से ऐसा क्यों कहा कि अब खेत से जाने का समय आ गया है? अपने शब्दों में लिखें।

प्र 4. गेहूँ की फ़सल किस महीने में कटती है? सोचकर बताएँ।

प्र 5. किसान के पड़ोसी और रिश्तेदार फ़सल काटने क्यों नहीं आए?

प्र 6. सोचकर बताएँ कि अगर किसान का पड़ोसी फ़सल काटने आ जाता तो क्या होता?

प्र 7. ''माँ ने कहा, **चिंता** मत करो, कुछ नहीं होगा।''

रेखांकित शब्द को ऐसे शब्द से बदलें कि इस वाक्य का अर्थ न बदले।

प्र 8. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ समझाते हुए एक–एक वाक्य लिखें।

परेशान :

शांत :

सहायता :

प्र 8. इस कहानी से संज्ञा और सर्वनाम शब्दों को ढूँढ कर लिखें।

संज्ञा शब्द :

सर्वनाम शब्द :

आत्म विश्वास

किसी गाँव में एक आदमी अपने परिवार के साथ रहता था। उसका नाम रामलाल था। उस गाँव में पानी की बहुत कमी थी। गाँव से तीन किलोमीटर दूर एक कुआँ था। उसी कुएँ से गाँव के लोगों को पानी लाना पड़ता था।

इतनी दूर से पानी लाना सभी गाँव वालों को अच्छा नहीं लगता था परन्तु उनके पास कोई और चारा भी नहीं था। सभी चाहते थे कि गाँव में पानी की सुविधा हो, लेकिन कुआँ खोदने की हिम्मत किसी में भी नहीं थी।

एक दिन जब रामलाल अपने साथियों के साथ पानी लेने गया तो वहाँ, पानी भर रहे लोगों ने कहा, ''तुम लोग इंतज़ार करो, पहले इस गाँव के लोग पानी भरेंगे, उसके बाद तुम पानी भरना।'' जब रामलाल ने इसका विरोध किया तो गाँव वालों ने कहा, ''अगर इतनी जल्दी है, तो तुम अपने गाँव में कुआँ क्यों नहीं खोद लेते?''

यह बात रामलाल के दिल को छू गई। उसने निश्चय कर लिया कि चाहे जो हो जाए, वह गाँव में कुआँ खोदकर ही दम लेगा।

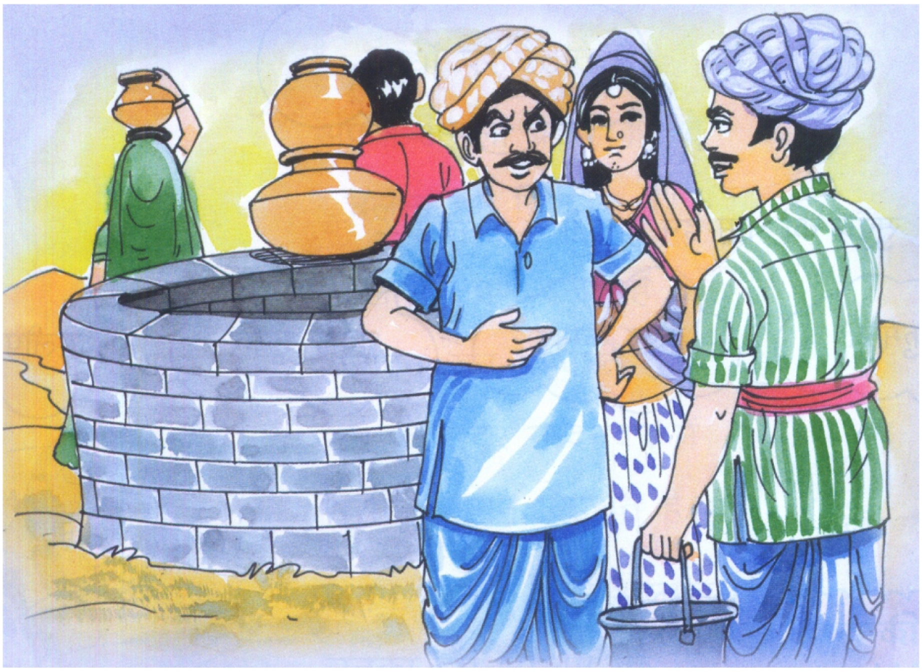

उसने गाँव के लोगों से कुआँ खोदने में मदद माँगी, लोगों ने रामलाल का मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा, ''रामलाल तुम्हें पता ही है हमारे गाँव की ज़मीन पथरीली है। यहाँ कुआँ खोदना बहुत कठिन काम है। इसलिए यह मूर्खतापूर्ण विचार छोड़ दो।''

रामलाल ने किसी की एक न सुनी और अगले ही दिन से कुआँ खोदना शुरू कर दिया। रामलाल की ज़िद देखकर उसके परिवार के सदस्य कुआँ खोदने में उसकी मदद करने लगे, काम कुछ आसान हुआ।

धीरे–धीरे कुआँ खोदने का काम आगे बढ़ता रहा। रामलाल के परिवार की मेहनत तथा लगन देखकर, गाँव के कुछ नौजवान भी उनकी मदद करने लगे। उनकी देखा–देखी गाँव की औरतें और बच्चे भी रामलाल की मदद करने पहुँच गए।

सभी लोगों की मेहनत रंग लाई। जिस काम को लोग असंभव समझ रहे थे, वह रामलाल की कोशिशों से आसानी से पूरा हो गया। कुएँ में पानी देखकर लोगों की खुशी का ठिकाना न रहा।

अब उन्हें पानी के लिए दूसरे गाँव जाने की ज़रूरत नहीं थी। रामलाल के आत्मविश्वास से गाँव में खुशहाली आ गई। इसीलिए कहा गया है, ''असंभव कुछ नहीं संभावनाएँ जोड़ के रखिए।''

साभार : राज्य शैक्षिक अनुसंधन एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली।

आत्म विश्वास

प्र 1. गाँव के सभी लोग दूसरे गाँव से पानी क्यों लाते थे?

प्र 2. गाँव के सभी लोग क्यों चाहते थे कि गाँव में पानी की सुविधा हो?

प्र 3. राम लाल ने कुआँ खोदने का फ़ैसला क्यों किया?

प्र 4. आपको राम लाल का चरित्र कैसा लगा? चार–पाँच वाक्यों में बताएँ।

प्र 5. मना करने के बाद भी गाँव के सभी लोग राम लाल की मदद के लिए क्यों आ गए?

प्र 6. पानी हमारे जीवन के लिए क्यों ज़रूरी है। अपने शब्दों में लिखें।

प्र 7. आत्मविश्वास से गाँव में **खुशहाली** आ गई।

रेखांकित शब्दों को बदलकर ऐसे शब्द लिखें ताकि इस वाक्य का अर्थ न बदले।

प्र 8. इस कहानी से आपको क्या समझ आया?

प्र 9. दिए गए मुहावरों को समझाते हुए वाक्यों में प्रयोग करें।

दिन को छू लेना :

मेहनत रंग लाना :

प्र 10. *कुँए से गाँव के लोगों को पानी भरना मना था।*

उस गाँव में पानी की कमी थी।

इस वाक्य में 'पानी' पुल्लिंग है और 'कमी' शब्द स्त्रीलिंग है।

इस तरह यह स्पष्ट होता है कि जिन संज्ञा शब्दों में स्त्री जाति का बोध हो या जो शब्द स्त्री जाति के अंतर्गत माने जाते हैं वे स्त्रीलिंग हैं।

उदाहरण के अनुसार इस कहानी से स्त्रीलिंग शब्दों को ढूँढकर लिखें।

मज़ेदार बातें : नदियों के नाम स्त्रीलिंग हैं – गंगा, यमुना, गोदावरी आदि। हमारे देश में एक नद भी है 'ब्रहम्पुत्रा'।

पत्र लेखन

पत्र–लेखन भी एक कला है जिसके सही प्रयोग से हमें कई तरह के लाभ होते हैं–

पत्र–लेखन आधुनिक युग में ई–मेल के रूप में परिवर्तित हो गया है। ऐसा होने के बाद भी पत्र के नियमों का पालन कर हम अपने ई–मेल को अधिक प्रभावी बना सकते हैं। लिखित रूप में विचारों, संदेशों तथा सूचनाओं को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए पत्र एक महत्वपूर्ण साधन है। पत्र लेखन की विशेषताएं निम्नलिखित हैं :

- **सरलता** – पत्र की भाषा सरल, समझने में आसान होनी चाहिए। जो भी बात हम कहना चाहते हैं, वह बात स्पष्ट रूप में लिखी हो। बेकार की बातों से पत्र की रोचकता ख़त्म हो जाती है।
- **विषय की स्पष्टता :** पत्र में जो लिखा गया है उसे पढ़कर, पढ़ने वाले के मन में कोई शंका या दुविधा नहीं होनी चाहिए। जो भी बताना चाहते हैं उसे स्पष्ट लिखें।
- **संक्षिप्तता :** पत्र बहुत अधिक बड़ा न हो जिससे पढ़ने वाले को बोरियत महसूस हो।

पत्र दो प्रकार के होते हैं :

1. औपचारिक पत्र 2. अनौपचारिक पत्र

1. औपचारिक या कार्यालयी पत्र – यह पत्र उन्हीं को लिखा जाता है, जिनके साथ हमारा व्यक्तिगत सम्बन्ध नहीं होता है। अगर होता है, तो इस पत्र को लिखते समय उसका कोई महत्व नहीं होता है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित पत्र आते हैं :

- आवेदन–पत्र
- व्यावसायिक–पत्र
- सरकारी पत्र

2. अनौपचारिक पत्र– यह पत्र ऐसे लोगों को लिखा जाता है, जिनसे हमारा व्यक्तिगत सम्बन्ध या परिचय होता है।

प्रायः परीक्षाओं में **औपचारिक पत्र** जैसे शिकायती–पत्र, आवेदन–पत्र तथा संपादक के नाम पत्र पूछे जाते हैं। इन पत्रों को लिखते समय निम्न बातों का ध्यान रखें :

- पता और दिनांकः– पत्र के ऊपर बाईं ओर पत्र लिखने वाले का पता व दिनांक लिखा जाता है।
- संबोधन और पता :– जिसको पत्र लिखा जा रहा है उस को उसके नाम तथा पद के साथ ही संबोधित किया जाता है। औपचारिक पत्रों में पद–नाम और कार्यालय का पता रहता है।
- विषय :– केवल औपचारिक पत्रों में प्रयोग करें (जिसे पढ़कर पत्र विषय–वस्तु समझ में आ जाए)
- पत्र की विषय–वस्तु :– यह पत्र का मूल विषय है, इसे संक्षेप में और स्पष्ट लिखें।
- पत्र की समाप्ति :– इसमें धन्यवाद, आभार सहित अथवा साभार जैसे शब्द लिखकर लेखक अपने हस्ताक्षर और नाम लिखता है।
- भाषा शुद्ध, सरल, स्पष्ट, विषयानुरूप तथा प्रभावकारी होनी चाहिए।

औपचारिक पत्र का नमूना

सरकारी अस्पताल के अच्छे प्रबंधन पर संतोष व्यक्त करते हुए चिकित्सा–अधीक्षक को पत्र लिखें।

सेवा में,

चिकित्सा–अधीक्षक,

सफ़दरजंग अस्पताल,

नई दिल्ली।

पता (जिसे पत्र लिखा जा रहा है)

दिनांक / Date

दिनांकः 10 .11. 2015

विषय

विषय : अस्पताल के प्रबंधन पर संतोष व्यक्त करने के संदर्भ में।

संबोधन

मान्यवर,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपके चिकित्सालय के सुप्रबंधन से प्रभावित हो कर आपको धन्यवाद दे रहा हूँ। गत सप्ताह मेरे पिता जी हृदय–आघात से पीड़ित होकर आपके यहाँ दाखिल हुए थे। आप के चिकित्सकों और सहयोगी स्टाफ ने जिस तत्परता, कर्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी से उनकी देखभाल तथा उनका इलाज किया उससे हम, परिवार के सारे सदस्य संतुष्ट हैं। सरकारी व्यवस्था पर हमारा विश्वास बढ़ा हैं आपके अस्पताल का अनुशासन प्रशंसनीय है। आशा है जब हम पुनर्परीक्षण हेतु आएँगे, तब भी वैसी ही सुव्यवस्था मिलेगी।

पत्र का विषय विस्तार

धन्यवाद!

समापन शब्द

भवदीय,

अनिल भारती

पत्र–लेखक का पूरा नाम

मकान नं. 12,

प्रगतिशील सोसायटी

संतरविदास नगर, पुणे।

पत्र लेखक का पता

प्रश्न :–

1. अवकाश लेने के लिए प्रधानाचार्य को पत्र लिखें।
2. अंकिता अपने स्कूल के मुख्याध्यापक को पत्र लिख रही है। उसका स्थानान्तरण प्रमाण–पत्र (Transfer Certificate) खो गया है और उसे स्थानान्तरण प्रमाण–पत्र की प्रतिलिपि लेने के लिए आवेदन करना है।
3. किसी दैनिक समाचार–पत्र के संपादक के नाम पत्र के संपादक के नाम पत्र लिखें जिसमें वृक्षों की कटाई को रोकने के लिए सरकार का ध्यान आकर्षित किया गया हो।
4. अपने क्षेत्र में बिजली–संकट से उत्पन्न कठिनाइयों का वर्णन करते हुए अधिशासी अभियन्ता विद्युत–बोर्ड को पत्र लिखिए।

साहस कथा

डेनियल बेन्ट नाम का एक साइकिलसवार इंग्लैण्ड में रहता था। जब वह 11 साल का था तब एक दिन स्कूल में वार्षिक सम्मेलन हुआ। सभी बच्चों के माता–पिता उपस्थित थे। स्कूल की मुख्याध्यापिका ने सभी बच्चों से पूछा, ''बड़े होकर आप क्या बनोगे?'' किसी ने कहा, ''मैं डॉक्टर बनूँगा।'' कोई बोला, ''मैं फुटबॉल खेलूँगा।'' डेनियल ने कहा, ''मुझे साइकिल से पूरी दुनिया की सैर करनी है और भले काम के लिए पैसे जुटाने हैं।'' सारी कक्षा उसपर हँस पड़ी। पीछे बैठे हुए कुछ अभिभावकों ने कहा, ''बहुत ख़ूब, शाबाश''।

उस घटना के लगभग 20 साल बाद डेनियल सचमुच 9000 मील की यानी 14481 किलोमीटर की दूरी तय करके इंग्लैण्ड से भारत आया। बिल्कुल अकेले, साथ में बस उतना ही सामान था जितना वह साइकिल पर रख सकता था। रास्ते में उसे अनेक संकटों का सामना करना पड़ा था। तक़दीर ने उन सारी मुसीबतों से उसे सही सलामत निकाल लिया था जो यात्रा के दौरान आई थीं। अपनी यात्रा के आख़िरी दिन डेनियल दक्षिण भारत के बांदीपुर अभयारण्य पहुँचा। एक हाथी के झुण्ड ने उसपर हमला कर दिया। किसी से सुना था, ''जब हाथी हमला करे तब उसके सामने खड़े हो जाओ और गर्दन झुकाकर उसे सलाम करो।'' 30 टन वज़न का यह जानवर अपने मार्ग में आने वाले भारी–भारी पेड़ों तक को तो बख़्शता नहीं, मुझे कहाँ छोड़ेगा? यही सोचकर डेनियल वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

छह महीने बाद अपने 31 वें जन्म दिवस पर वह चेम्बकोल्ली नामक छोटे गाँव में पहुँचा। वहाँ के लोगों ने उसका जमकर स्वागत किया। 'हैपी बर्थ डे' के पटल जगह–जगह लगाए थे। यह देखकर डेनियल की आँखें भर आईं। उसने उन आँसूओं को बहने दिया। बीस साल बाद उसका सपना साकार जो हुआ था।

– मीरा तेन्दुलकर

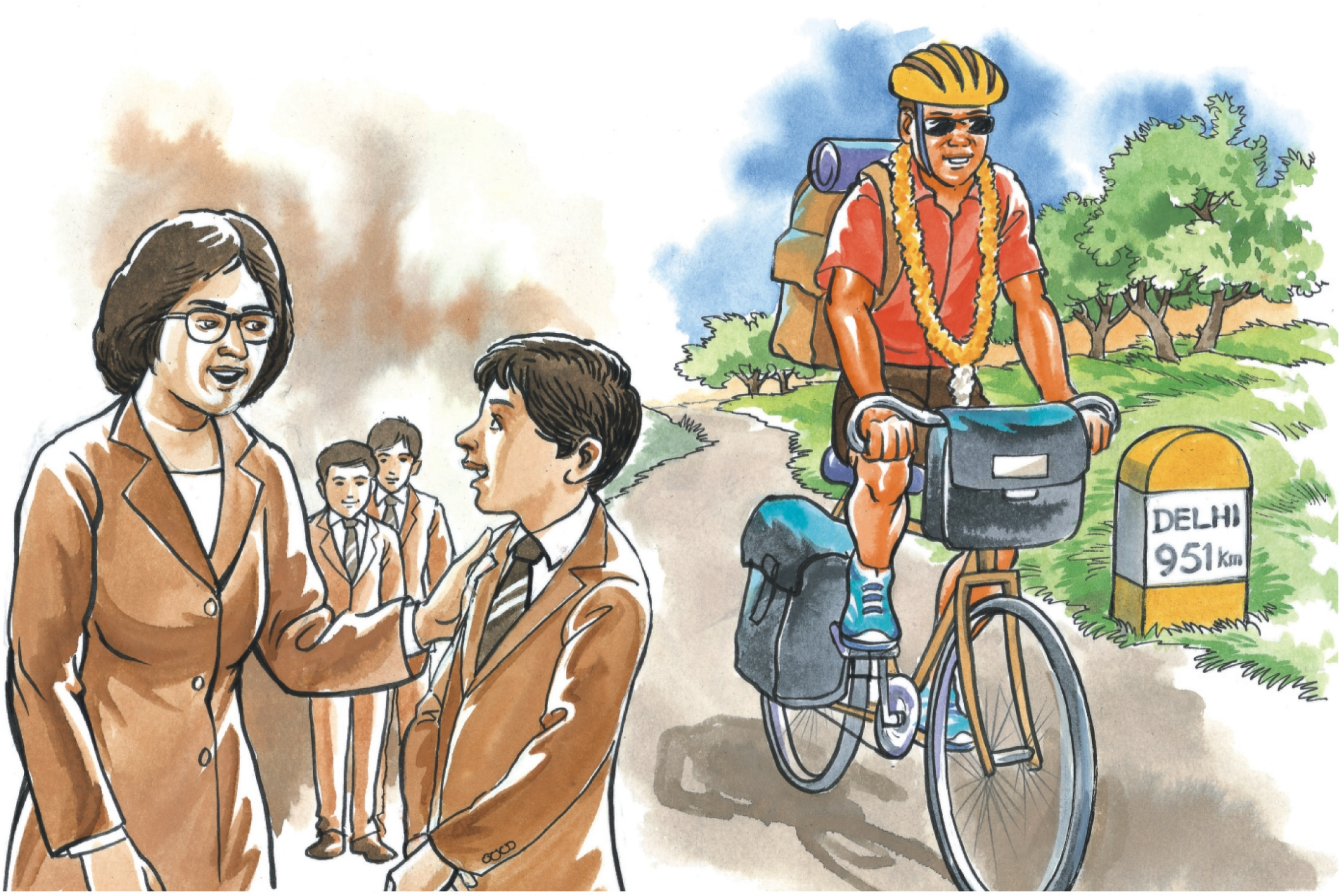

साहस कथा

प्र 1. डेनियल ने साइकिल पर कितनी लम्बी दूरी तय की थी?

डेनियल ने ९००० मील यानी १४४८१ किलोमीटर की दूरी तय की।

प्र 2. डेनियल ने किस उम्र में अपनी यात्रा पूरी की? उस यात्रा की समाप्ति कहाँ और कैसे हुई?

डेनियल ने अपनी यात्रा ३१ वर्ष की उम्र में पूरी की। उस यात्रा की समाप्ति चेम्बकोल्ली नाम के छोटे से गांव में हुई। चेम्बकोल्ली के लोगों ने उसका खूब स्वागत किया। उसका जन्म दिन मनाया। उसके जन्मदिन पर वहाँ के लोगों ने जगह-जगह हैप्पी बर्थ डे के पटल लगाए थे। इसे देखकर डेनियल की आँखें भर आई थीं।

प्र 3. डेनियल की बात सुनकर पूरी कक्षा उस पर क्यों हँस पड़ी?

डेनियल की पूरी कक्षा को यह लगता था कि साइकिल से कोई पूरी दुनिया की सैर कैसे कर सकता है। क्योंकि एक जगह जाने के लिए अलग-अलग वाहनों का इस्तेमाल किया जाता है। डेनियल की बात सब को बेतुकी लगी थी।

प्र 4. 'पीछे बैठे कुछ अभिभावकों ने उसे शाबाशी दी।'

रेखांकित शब्द का अर्थ बताएँ और इसी शब्द से एक नया वाक्य बनाएँ।

अभिभावकों - बच्चों के माता-पिता

सभी बच्चों के अभिभावक स्कूल में मौजूद थे।

प्र 5. ''यह जानवर भारी–भारी पेड़ों को तो बख़्शता नहीं, मुझे कहाँ छोड़ेगा।''

रेखांकित शब्द को ऐसे शब्द से बदलें कि वाक्य का अर्थ न बदले। अब इसी शब्द से कोई नया वाक्य बनाएँ।

यह जानवर भारी-भारी पेड़ों को तो बख़्शता नहीं मुझे कहाँ छोड़ेगा।

राजा ने इतनी बड़ी गलती के बाद भी सेनापति की जान बख़्श दी।

प्र 6. इस पूरे पाठ की चार घटनाओं को क्रमवार लिखें।

१. शिक्षिका के पूछने पर डेनियल ने कहा मैं साइकिल से पूरी दुनिया की सैर करूंगा और भले काम के लिए पैसा इकट्ठा करूंगा।

२. २० साल बाद ९००० मील यानी १४४८१ किलोमीटर की दूरी तय करके इंग्लैण्ड से भारत आना।

३. यात्रा के आख़िरी दिन डेनियल का दक्षिण भारत के बांदीपुर अभ्यारण्य पहुँचना और हाथी के एक झुण्ड से डेनियल का सामना होगा।

४. ३१ वे जन्मदिन पर चेम्बरकोल्नी नामक छोटे गाँव में पहुँचना। वहाँ के लोगों ने डेनियल का स्वागत किया जाना व उसका जन्मदिन धूमधाम से मनाना।

प्र 7. डेनियल किसी भले काम के लिए पैसे जुटाना चाहता था। आप के अनुसार वह भला काम क्या होगा?

डेनियल के गांव में शायद कोई ऐसा बच्चा हो जो अनाथ हो, वह उसकी पढ़ाई का ख़र्चा स्वयं करना चाहता हो। ग़रीबों की मदद करना भी शायद उनका भला काम हो सकता है।

प्र 8. डेनियल की यात्रा के दौरान का कोई एक दिन सोचें और उस के बारे में विस्तार से बताएँ, निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए:

- दिन भर उसे क्या दिक्कतें आई होंगी?
- रास्ते में उसे कौन–कौन से लोग मिले होंगे?
- दिन भर उसके मन में क्या चल रहा होगा?

जब डेनियल जंगल की झाड़ियों से गुज़रा होगा तो उसे चोट लगी होगी और कुछ जानवरों का सामना भी करना पड़ा होगा। रास्ते में उसे अलग देशों के लोग मिले होंगे, कुछ अच्छे व बुरे। अलग-अलग संस्कृति के बारे में जानने का मौक़ा मिला होगा।

डेनियल सोचता होगा कि चाहे कुछ भी हो वह अपनी मंज़िल पर पहुँचेगा ताकि उसका सपना पूरा हो सके।

प्र 9. अपना सपना पूरा करके डेनियल की आँखों में आँसू क्यों आ गए?

साइकिल से ९००० मील की यात्रा करना कोई मामूली बात नहीं थी। इस दौरान उन्होंने कई परेशानियों का सामना किया और अपनी मंज़िल पर पहुँचे। जो सपना उन्होंने देखा था वह पूरा हो गया था। इसी ख़ुशी में उनकी आँखों से आँसू निकल पड़े।

प्र 10. इस पाठ का कोई और शीर्षक सोचें और लिखें। यह भी बताएँ के आपने यह शीर्षक क्यों चुना?

डेनियल का सपना : क्योंकि डेनियल ने यह सपना देखा और अपने सपने को पूरा भी किया।

प्र 11. 'आँखें भर आना।' मुहावरे का अर्थ समझाते हुए एक नया वाक्य बनाएँ।

अर्थ - आँसू आना

अमर की सफलता पर उसकी दादी की आँखें भर आईं।

प्र 12. आप जितने मुहावरे जानते हैं या सुने हैं। उन मुहावरों को अपनी कॉपी में लिखें।

- *नौ दो ग्यारह होना*
- *आँखें भर आना*
- *मुँह में पानी आना*
- *आँखों का तारा*
- *मुँह मीठा करना*
- *बाल-बाल बचना*

मुहावरे को समझते हैं? कोई भी ऐसा वाक्यांश जो अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को बताए उसे मुहावरा कहते हैं जैसे– 'होश उड़ जाना' मुहावरा है।

काठ का कटोरा

कुछ साल पहले की बात है, दिल्ली की एक कॉलोनी में एक छोटा लड़का अपने माता–पिता और दादाजी के साथ रहता था। दादा और पोते में गहरा प्रेम था। दोनों कई घंटे एक साथ बिताते थे। पोते का नाम था, अतुल। वह दादाजी की गोद में बैठकर ढेरों कहानियाँ सुनता था। कहानी कैसी भी हो, वह दादाजी के चेहरे को ध्यान से देखता रहता और उनसे उन कहानियों के बारे में घंटों सवाल–जवाब करता। अतुल दादाजी का घनिष्ठ मित्र और जीने का सहारा था।

तीन साल पहले अतुल की दादी जी की मृत्यु हो गई थी। अतुल की मम्मी अपने पति और पुत्र की तो अच्छी तरह देखभाल करती, परन्तु उस बुजुर्ग व्यक्ति के अकेलेपन की पीड़ा को नहीं समझती थी। अगर कभी उनके हाथों से कोई चीज़ छूटकर गिर जाती, तब अतुल की मम्मी कुछ अधिक ही अधीर हो जाती।

यह उम्र का तकाज़ा ही था कि दादाजी के हाथ काँपने लगे थे। एक दिन वे डाइनिंग टेबल पर बैठकर कॉफी पी रहे थे। अधिक ठंड होने के कारण उनके हाथ ज़ोर–ज़ोर से काँपने लगे। कॉफी का कप हाथ से छूटकर पहले सफ़ेद धुले हुए डाइनिंग कवर पर गिरा और फिर ज़मीन पर गिरकर टुकड़े–टुकड़े हो गया। यह देखकर अतुल की माँ गुस्से से चिल्लाई, ''पिताजी! आप कोई काम कभी ढंग से करते हो? सारा दिन सिर्फ़ तोड़–फोड़, कहाँ से लाऊँ इतने सारे बर्तन, तोड़ने के लिए?'' दादाजी बिना कुछ कहे, आँखों में आँसू भरे चुपचाप देखते रहे। अतुल ये सब देख रहा था। उसने कुछ नहीं कहा। वह खाना बीच में ही छोड़कर उठ गया।

इस घटना के बाद से दादाजी रसोईघर के अन्दर रखी एक पुरानी टेबल पर, अपना खाना खाने लगे। वे वहीं पर अपने बर्तन भी रखते थे। इस नई व्यवस्था से वे बिल्कुल भी ख़ुश नहीं थे। इस बात की उदासी उनकी आँखों से झलकती थी।

शाम होते ही, अतुल जल्दी से अपना खाना ख़त्म करके दादाजी के पास रसोईघर में, उस पुरानी टेबल पर पहुँच जाता और उनके गले लगकर ढेरों बातें करता।

जैसे–जैसे समय व्यतीत होता गया, दादाजी दिन–प्रतिदिन कमज़ोर होते गए। उनके हाथ और ज़्यादा

काँपने लगे। एक रात जब वे रसोईघर में दलिया खा रहे थे कि अचानक उनके हाथ से काँच का बर्तन छूटकर, नीचे गिरकर, टुकड़े–टुकड़े हो गया। आवाज़ सुनकर अतुल और उनके माता–पिता जल्दी से रसोईघर में पहुँचे। दरवाज़े पर पहुँचकर उन्होंने देखा कि फ़र्श पर दलिया और काँच के टुकड़े बिखरे पड़े हैं।

बूढ़े दादाजी असहाय स्थिति में थे। अतुल की माँ गुस्से से अपने पति पर चिल्लाई– ''घर के सारे बर्तन तोड़कर रख दिए हैं, तुम्हारे पिताजी ने। मैं तो लाते–लाते थक गई। अब तो उनका एक ही इलाज है कि इन्हें एक काठ का कटोरा लाकर दे दिया जाए।''

एक दिन अतुल अपनी माँ के साथ बाज़ार जा रहा था। उसने रास्ते में एक बढ़ई की दुकान देखी। अगले दिन वह वहाँ से लकड़ी की गोलाई वाले कुछ टुकड़े ख़रीदकर ले आया और उन्हें जोड़कर कटोरा जैसा एक छोटा बर्तन बनाने लगा। उसके माता–पिता कमरे से बाहर आए। उन्होंने अतुल से पूछा, क्या कर रहे हो?''

उसने जवाब दिया, ''मैं आपके लिए काठ का कटोरा बना रहा हूँ, ताकि जब आप भी बूढ़े हों, तब इसमें खाना खा सकें।

अतुल के माता–पिता एक दूसरे की शक्ल देखते रह गए। दोनों अतुल से नज़रें मिलाने का साहस भी नहीं कर पा रहे थे। अब अतुल की माँ को अपनी ग़लती का एहसास हुआ। उसने दादाजी के पैर पकड़कर क्षमा माँगी। दादाजी ने आँसू–भरी आँखों से बहू को देखा और क्षमा कर दिया। दादाजी के दो आँसू पुत्रवधु के सिर पर आशीर्वाद की तरह गिर पड़े। वह दादाजी को आदर सहित अंदर लाई, उन्हें डाइनिंग टेबल की कुर्सी पर प्यार से बैठाया, और खाने में उनकी मदद करने लगी।

उस दिन के बाद दादाजी ने रसोईघर की उस पुरानी टेबल पर बैठकर कभी–भी अकेले खाना नहीं खाया। वह हमेशा अतुल के साथ डाइनिंग टेबल पर बैठकर खाना खाते।

अतुल यह देखकर बहुत ख़ुश होता था। उसके माता–पिता भी उसके दादाजी की उतनी ही देखभाल करने लगे, जितनी वह करता था। सारा परिवार ख़ुशी के साथ रहने लगा।

साभार : राज्य शैक्षिक अनुसंधन एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली।

काठ का कटोरा

प्र 1. कहानी के उन वाक्यों को लिखें जिनसे पता चलता है कि अतुल और दादाजी में बहुत प्यार था?

प्र 2. अतुल और दादाजी घंटों साथ–साथ कैसे व्यतीत करते थे?

प्र 3. अतुल की माँ दादाजी पर क्यों गुस्सा करती रहती थीं?

प 4. अतुल ने अपने माता के लिए भी काठ का कटोरा बनाने का फ़ैसला क्यों किया?

प्र 5. कहानी से आपको क्या समझ आया?

प्र 6. 'असहाय' शब्द का अर्थ बताते हुए उससे वाक्य बनाएँ।

प्र 7. 'उम्र का तकाज़ा' शब्द से आप क्या समझते हैं? अपने शब्दों में बताएँ।

प्र 8. पिताजी को **काठ** का कटोरा लाकर दे दिया जाए।

रेखांकित शब्दों को बदल कर ऐसा शब्द लिखें कि वाक्य का अर्थ न बदले।

प्र 9. यह कहानी थोड़ी बड़ी है। इस कहानी को अगर छः–सात वाक्यों में लिखना हो तो क्या और कैसे लिखेंगे?

प्र 10. पिछले पाठ में हमने मुहावरे के बारे में जाना था कि मुहावरा किसे कहते हैं। उसी तरह क्या आप लोकोक्तियाँ समझते हैं? लोकोक्तियाँ वास्तव में लोक अनुभवों से बनती हैं। किसी समाज ने जो कुछ अपने लंबे अनुभव से सीखा है उसे एक वाक्य में बाँध दिया है। ऐसे वाक्यों को ही लोकोक्ति कहते हैं। इसे कहावत या जनश्रुति भी कहते हैं। जनश्रुति मतलब लोगों से सुनी हुई बातें, जैसे 'बकरे की माँ कब तक ख़ैर मनाएगी या नाच न जाने आँगन टेढ़ा।' यहाँ इन दोनों लोकोक्तियों से साफ़ पता चलता है कि वाक्य पूरा हो गया। निम्नलिखित लोकोक्तियों का अर्थ वाक्य में समझाएँ :

1. अधजल गगरी छलकत जाए।

2. ऊंची दुकान फीका पकवान

3. जिसकी लाठी उसकी भैंस

हौसला

दशरथ को मंच पर ले जाया जा रहा था। तालियों की गड़गड़ाहट तेज़ हो गयी थी। सभी लोग उन्हें प्रशंसा की नज़रों से देख रहे थे। मगर सीधे–सादे दशरथ माँझी संकोच से झुके जा रहे थे। उन्हें मुख्यमंत्री के ठीक बग़ल में बिठाया गया। इतनी बड़ी भीड़ को देखकर वह अतीत में खो गए। गया ज़िले में बसा अपना गाँव उनकी आँखों के आगे नाच रहा था। दलित लोगों की एक छोटी–सी बस्ती। गाँव के बग़ल में सदियों से खड़ा विशालकाय पहाड़। पहाड़ की दूसरी ओर थे गाँव के खेत। पहले ऊँचे पहाड़ का पूरा चक्कर काटो तभी गाँव से खेत तक पहुँचा जा सकता था।

दशरथ को अपनी शादी याद आ रही थी। विवाह के बाद पत्नी घर से बाहर तक मदद करती। दशरथ हल–बैल के साथ खेत के लिए रवाना हो जाते। पत्नी भोजन तैयार करती। खाने की पोटली साथ लेती और घंटों पहाड़ की परिक्रमा करती तब कहीं जाकर पसीने से लथपथ खेत तक पहुँच पाती। दशरथ पत्नी की हालत देखकर परेशान हो जाते।

एक रोज़ पत्नी ने कहा, ''क्यों जी, इस पहाड़ को काटा नहीं जा सकता? सड़क बन जाती तो घंटों की दूरी मिनटों में तय हो जाती।''

''ठीक कहती हो तुम!'' दशरथ ने सोचकर कहा, ''सड़क तो बनानी ही पड़ेगी!''

''मगर कैसे?'' पत्नी ने सवाल किया। दशरथ चुप रहे।

शाम में दशरथ ने पूरे गाँव की बैठक बुलाई। बैठक में उन्होंने पत्नी की पीड़ा बताई और सभी से श्रमदान करने की विनती की। ''एकजुट होकर कोशिश करेंगे तो पहाड़ काटकर सड़क बनाई जा सकती है,'' उन्होंने गाँव वालों को समझाने का प्रयास किया।

''ऐसा आज तक कभी हुआ है जो होगा? सरकार भी कोशिश करके थक चुकी। संभव होता तो अब तक सड़क नहीं बन गयी होती? हमारा समय और श्रम बर्बाद मत करो।'' सबने एक स्वर में कहा, ''जैसे चल रहा है, चलने दो। हम सब इसके आदी हो चुके हैं।''

दशरथ जब बार–बार विनती करने लगे तो बड़े–बूढ़ों ने चुटकी ली, ''अपनी मेहरिया के प्रेम में पगला गए हो क्या? चुपचाप जाकर अपना काम करो।''

दशरथ अपने घर लौट तो आए मगर उन्होंने ठान लिया था, ''सड़क तो बनकर ही रहेगी।'' अगले दिन लोगों की आँख खुली तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। दशरथ ने चट्टान काटना शुरू कर दिया था। गैंती, कुदाल, टोकरी के साथ वह पहाड़ पर मौजूद थे। अब तो हर रोज़ यही होता। वह घंटों जमकर पसीना बहाते। कोई पागल कहता तो कोई मूर्ख। मगर दशरथ पर कोई असर नहीं होता। कठिनाइयों, बीमारियों और तमाम बाधाओं से वे अकेले लड़ते रहे।

दिन महीनों में और महीने साल में बदलते गये। जवान दशरथ अधेड़ हो गए और आख़िर वह दिन आ ही गया... अभी सूर्य की किरणें हर घर तक पहुँची भी नहीं थीं कि गाँव में शोर हुआ, ''सड़क निकल गई... सड़क निकल गई!'' सभी पहाड़ की ओर भागे। वहाँ पहुँचकर जो कुछ देखा उस पर सहसा विश्वास नहीं हुआ। सबने अपनी आँखें बार–बार मलीं... सामने काले–काले पहाड़ के बीचोंबीच मटमैली सड़क पानी की पतली धार की तरह जगमगा रही थी। सभी ख़ुशी से उछल पड़े। उन्होंने दशरथ को कंधे पर उठा लिया और ज़ोर–ज़ोर से चिल्लाने लगे, ''दशरथ माँझी की जय, दशरथ माँझी की जय!''

लोगों की जय–जयकार से दशरथ जाग पड़े। जलसे में भीड़ नारे लगा रही थी। दशरथ को 'पहाड़–पुरुष' का ख़िताब देने के लिए मुख्यमंत्री उठ खड़े हुए। दशरथ जैसे ही आगे बढ़े मुख्यमंत्री ने उन्हें गले से लगा लिया। अकेला चना भाड़ फोड़ सकता हो या नहीं, अकेला आदमी पहाड़ तोड़ सकता है। दशरथ माँझी ने यह कर दिखाया था।

– भगवती प्रसाद द्विवेदी

हौसला

प्र.1. ऐसे कुछ वाक्य ढूँढें जिन से पता चलता है कि, दशरथ अपनी पत्नी की हालत देखकर परेशान हो जाते थे?

प्र.2. दशरथ को सड़क बनाने में कितना समय लग गया और क्यों ?

प्र.3. गाँव वालों ने दशरथ का साथ देने से क्यों मना कर दिया था?

प्र.4. 'सड़क तो बनकर ही रहेगी' दशरथ ने अपने मन में ऐसा ठान लिया था ? उसे पूरा करने के लिए उन्होनें क्या किया?

प्र.5. 'बैठक में उन्होंने सभी से **श्रमदान** करने की विनती की।'

रेखांकित शब्द का अर्थ बताएँ। इस शब्द से एक नया वाक्य भी बनाएँ।

प्र.6. आपको क्या लगता है, दशरथ माँझी किस संकोच में झुके जा रहे थे ?

प्र.7. अपनी जय जयकार सुनकर दशरथ माँझी को कैसा महसूस हो रहा होगा? सोचें और लिखें।

प्र.8 अगर आपको इस कहानी का शीर्षक देना हो तो आप क्या देते और क्यों? विस्तार से बताएँ।

प्र.9. '...घंटों पहाड़ की परिक्रमा करती...।' इस वाक्य का अर्थ अपने शब्दों में समझाएँ।

प्र.10. यह कहानी थोड़ी–सी बड़ी है। इसे आठ–दस वाक्यों में लिखें।

प्र.11. पिछले दो पाठों में हमने मुहावरे और लोकोक्तियों के बारे में जाना। अब आप मुहावरे और लोकोक्तियाँ का भेद अच्छी तरह से समझ गए होंगे। नहीं? बहुत आसान है। इसे दूसरे तरीक़े से समझने की कोशिश करते हैं। मुहावरे और लोकोक्तियों में अंतर बहुत साफ़ है। मुहावरा वाक्यांश यानी किसी वाक्य का अंश होता है और इसका स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता, जैसे– अक्ल का दुश्मन, आँख दिखाना, आँख चुराना, कान भरना, कान पर जूँ तक न रेंगना, नाक रगड़ना आदि। लोकोक्ति संपूर्ण वाक्य है और इसका प्रयोग स्वतंत्र रूप से किया जा सकता है, जैसे–

अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।

आम के आम गुठलियों के दाम।

दूध का दूध पानी का पानी।

धागे से कपड़े तक

''मामू, कितनी गरमी है और यह रूमाल पसीना भी नहीं पोंछ रहा है।'' गरमी से परेशान सलमा बोली।

''यह सिंथैटिक है। यह पसीना नहीं सोखेगा। इसमें सिकुड़न नहीं पड़ती है। इसे इस्त्री करने की ज़रूरत भी नहीं है।'' सलमा के भाई असलम ने जवाब दिया।

''सच मामू?'' सलमा को आश्चर्य हुआ।

''हाँ।'' मामू ने जवाब दिया, ''कपड़े दो तरह के धागों से बनते हैं। एक प्रकार के धागे हमें प्रकृति से मिलते हैं, जैसे, सूती, रेशमी और ऊनी धागे।

जूट के पेड़ की छाल से जूट बनता है। इसे पटसन भी कहते हैं। जूट की पैदावार असम और बंगाल में अधिक होती है। कपास के पेड़ से रुई मिलती है। इससे सूती धागा बनता है। भेड़, ख़रगोश, ऊँट और याक जैसे जानवरों के बालों से ऊन बनती है। इसी प्रकार रेशम के कीड़े से रेशमी धागे मिलते हैं। कपड़े बनाने के लिए दूसरी तरह के धागे हम अलग–अलग रसायन से फ़ैक्टरी में बनाते हैं। इन्हें सिंथैटिक धागे कहते हैं।''

मामू कुछ पल रुके और उन्होंने मुस्कराते हुए पूछा, ''खादी का नाम सुना है ?''

''हाँ,'' सलमा और असलम ने एक साथ कहा।

''खादी हाथ से बुना सूत का कपड़ा होता है। महात्मा गाँधी चरख़े से सूत काता करते थे।'' असलम ने बताया।

''मामू, सिंथैटिक धागे के बारे में भी बताएँ?'' सलमा ने कहा।

''सिंथैटिक धागे जैसे, नाइलोन, पॉलिएस्टर, एक्रिलिक और रेयान अलग–अलग रसायन से फैक्टरी में तैयार होते हैं। सिंथैटिक धागे प्राकृतिक धागों से ज़्यादा मज़बूत होते हैं। आजकल इनसे बने कपड़ों का बहुत चलन है। ये धागे पानी नहीं सोखते और आग के नज़दीक जाते ही पिघल जाते हैं। सिंथैटिक धागों को लपेटकर फिर ताने–बाने में पिरोकर उससे हैंडलूम या मशीन पर बुनाई करते हैं और कपड़ा तैयार हो जाता है।'' मामू ने बताया।

''अब मैं सूती रूमाल ही लूँगी।' सलमा मुस्कराते हुए बोली।

– कुसुम सिंह

धागे से कपड़े तक

प्र 1. सिंथैटिक धागे किसे कहते हैं?

प्र 2. पटसन किसे कहते हैं? अपने शब्दों में बताएँ।

प्र 3. सिंथैटिक धागे आग के नज़दीक जाते ही क्यों पिघल जाते हैं?

प्र 4. सिंथैटिक कपड़ा कैसे तैयार होता है?

प्र 5. इस पाठ से आपको कौन–सी जानकारी सबसे महत्वपूर्ण लगी?

प्र 6. 'अब मैं सूती रूमाल ही लूँगी' सलमा ने ऐसा क्यों कहा?

प्र 7. 'खादी' का अर्थ समझाते हुए वाक्य लिखें।

प्र 8. 'कुछ प्रकार के धागे हमें प्रकृति से मिलते हैं' इस वाक्य का अर्थ समझाते हुए प्राकृतिक धागे मिलने के स्त्रोत बताएँ?

प्र 9. मामू की बात सुनकर सलमा को **आश्चर्य** हुआ।

रेखांकित शब्द को ऐसे शब्द से बदले कि इस वाक्य का अर्थ न बदले। इसी शब्द से दो नये वाक्य भी बनाएँ।

प्र 11. इस लेख में आए स्त्रीलिंग ओर पुल्लिंग शब्द ढूँ कर लिखें।

नोट : स्त्रीलिंग शब्द पहचानने के आसान तरीक़े : जिन शब्दों के अंत में 'ख' होते हैं, वे स्त्रीलिंग कहलाते हैं, जैसे– ईख, भूख, चोख, राख, कोख, लाख, देखरेख आदि।

जिन संज्ञा शब्दों से पुरुष जाति का बोध हो या जो शब्द पुरुष जाति के अंतर्गत माने जाते हैं, वे पुल्लिंग कहलाते हैं।

मज़ेदार बातें : पेड़ों व अनाजों के नाम पुल्लिंग होते हैं, जैसे– पीपल, आम, नाम, जामुन, बरगद व गेहूँ, दाल, चना, मटर, बाजरा, जौ आदि। जिन शब्दों के अंत में लू होता है, वे स्त्रीलिंग कहलाती हैं, जैसे– बालू, दारू आदि मगर याद रहे 'आलू' पुल्लिंग है।

चम्मच, चमचा और चमचागिरी

चम्मच, चमचा, चमचागिरी... इन वस्तुओं और शब्द का हम सभी इस्तेमाल करते हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि चम्मच पृथ्वी पर इस्तेमाल होने वाले बर्तनों में सबसे पुराना है। हाँ, आपकी बात भी सही है कि आपकी उँगलियाँ तो उससे भी पुरानी हैं, लेकिन आप अपनी उँगलियों को बर्तन तो नहीं कहते न!

रसदार सब्ज़ी, दाल या शोरबा चम्मच से आसानी से खाए जाते हैं। ख़ास तौर पर तब, जब वे गरमा–गरम परोसे गए हों। जब इंसान को तरल खाना मुँह में पहुँचाने की ज़रूरत पड़ी, तब उसने किसी चम्मचनुमा चीज़ का इस्तेमाल किया। इंसान पहले पहल सीपियों और सही आकार के पत्थर से काम चलाता होगा, पर 1000 ई.पू. में मिस्र में हत्थेवाली चम्मचों के प्रमाण मिलते हैं। ऋग्वेद में भी धातु की बनी चम्मच पर प्रकाश की चमक का ज़िक्र है।

यूनानी, रोमन व चीनी सभ्यता में भी चम्मचों के इस्तेमाल के प्रमाण मिलते हैं। काँसा, चाँदी, लकड़ी, हाथी दाँत और गाय के सींग से चम्मचें बनाई जाती थीं और इनके हत्थों पर ख़ूबसूरत नक्क़ाशी भी की जाती थी।

नारियल के खोल से बनी चम्मचों को आप आज भी ऐसी सब जगह पाएँगे, जहाँ नारियल के पेड़ उगते हैं और खाने में नारियल का इस्तेमाल होता है।

आप भी अपने आस–पास की चीज़ों से चम्मच बना सकते हैं। केरल में आम के पत्ते के दोनों सिरों को सींक से बेध कर बच्चे चम्मच बनाते हैं और बड़े मज़े से ज़्यादा पानी में पके चावल की कंजी खाते हैं।

चम्मचों के बारे में तो काफ़ी जानकारी मिलती है, लेकिन चमचागिरी कब शुरू हुई, यह पता लगाना चाहिए। हमारी भाषा में नए शब्द कहाँ से आते हैं, यह भी एक दिलचस्प खोज होगी

– मनीषा चौधरी

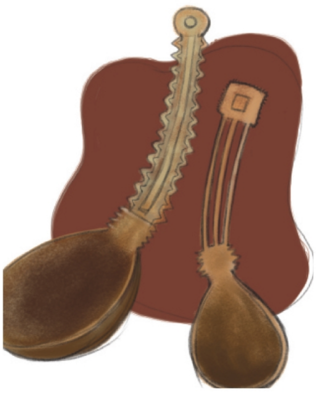

चम्मच, चमचा और चमचागिरी

प 1. चम्मच किन–किन धातुओं से बनाई जाती हं?

प्र 2. केरल में चम्मच कैसे बनाए जाते हैं?

प्र 3. किन वाक्यों से पता चलता है कि चम्मच बर्तनों में सबसे पुराना है?

प्र 4. चम्मच का इस्तेमाल क्यों किया गया?

प्र 5. इस पाठ को पढ़कर आपको कौन–सी दो नई जानकारियाँ मिली।

प्र 6. इस पाठ को पढ़कर आपको कौन–कौन सी जानकारियाँ महत्वपूर्ण लगी?

प्र 7. 'चमचागिरी' शब्द का अर्थ अपने शब्दों में समझाए।

प्र 8. चमचागिरी शब्द का अर्थ बताते हुए वाक्य बनाएँ।

प्र 9. 'भाषा में नए शब्द कहाँ से आते हैं, यह भी एक दिलचस्प खोज होगी।' इस वाक्य का अर्थ अपने शब्दों में समझाएँ।

प्र 10. वह शब्द जो किसी शब्द से पूर्व लगकर उस शब्द का अर्थ बदल देते हैं, उन्हें **उपसर्ग** कहते हैं।

जैसे : **परि** – **परि**चय, **परि**णाम

अब उदाहरण के अनुसार उचित उपसर्ग लगाकर शब्द बनाए :–

1. आर्य 2. डर 3. उपस्थित 4. नायक 5. भाग्य

प्र 11. शब्दों के पश्चात जो अक्षर या अक्षर समूह लगाया जाता है, जिससे अर्थ में विशिष्टता या परिवर्तन आ जाता है, उन्हें **प्रत्यय** कहते हैं।

जैसे : **कर** – जा**कर**, मिल**कर**

अब '**इक**' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाएँ :–

1. सप्ताह 2. व्यक्ति 3. अर्थ 4. मास 5. वर्ष

रिपोर्ट / प्रतिवेदन

रिपोर्ट / प्रतिवेदनः सूचनाओं के तथ्यों के साथ आदान–प्रदान को रिपोर्ट या रिपोर्टिंग कहते हैं। प्रतिवेदन इसका हिंदी रूपांतरण है। रिपोर्ट किसी संस्था, आयोजन या कार्यक्रम की तथ्यात्मक जानकारी है। लगभग सभी संस्थाएं वार्षिक / अर्द्धवार्षिक प्रगति रिपोर्ट भेजती हैं।

रिपोर्ट के गुणः

- भूमिका स्पष्ट एवं आकर्षित होनी चाहिए।
- तथ्यों की जानकारी स्पष्ट, सटीक, प्रामाणिक हो।
- संस्था / विभाग के नाम का उल्लेख हो।
- अध्यक्ष या पदाधिकारियों के नाम लिखे गए हों।
- गतिविधियाँ चलाने वालों के नाम दिये गए हों।
- कार्यक्रम का उद्देश्य स्पष्ट हो।
- आयोजन–स्थल, दिनांक, दिन तथा समय सुस्पष्ट लिखा गया हो।
- जो लोग उस कार्यक्रम से जुड़े हों उनके नाम स्पष्ट हों।
- दिए गए भाषणों / वक्तव्यों / बातों के मुख्य अंश रिपोर्ट में अवश्य लिखा जाना चाहिए, इससे रिपोर्ट प्रभावी होती है।
- कार्यक्रम से सम्बंधित दूसरे पक्षों की बातें भी लिखनी चाहिए।
- लिए गए निर्णयों की जानकारी।
- भाषा आलंकारिक या साहित्यिक न हो कर सूचनात्मक होनी चाहिए।
- सूचनाएँ लिखते समय 'मैं' या 'हम' का प्रयोग न करें।
- सूचनाएँ संक्षिप्त और क्रमवार लिखी जानी चाहिए।
- नई बात, नए अनुच्छेद से शुरू करें।
- प्रतिवेदक या रिपोर्टर के हस्ताक्षर / नाम अवश्य हो।

ध्यान रहे कि रिपोर्ट लिखना बोरिंग कार्य नहीं है, इसे चुनौती की तरह लें। परिणाम पर गतिविधि से ज़्यादा ज़ोर दें, विवरण से आगे जाएँ और विश्लेषणात्मक बनाएँ।

स्थान

जहाँ पहिया है

पुडुकोट्टई (तमिलनाडु) : साइकिल चलाना एक सामाजिक आंदोलन है? कुछ अजीब–सी बात है–है न! लेकिन चौंकने की बात नहीं है। पुडुकोट्टई ज़िले की हज़ारों नवसाक्षर ग्रामीण महिलाओं के लिए यह अब आम बात है। अपने पिछड़ेपन पर लात मारने, अपना विरोध व्यक्त करने और उन ज़ंजीरों को तोड़ने का जिनमें वे जकड़े हुए हैं, कोई–न–कोई तरीका लोग निकाल ही लेते हैं। कभी–कभी ये तरीके अजीबो–गरीब होते हैं।

भारत के सर्वाधिक गरीब ज़िलों में से एक है पुडुकोट्टई। पिछले दिनों यहाँ की ग्रामीण महिलाओं ने अपनी स्वाधीनता, आज़ादी और गतिशीलता को अभिव्यक्त करने के लिए प्रतीक के रूप में साइकिल को चुना है। उनमें से अधिकांश नवसाक्षर थीं। अगर हम दस वर्ष से कम उम्र की लड़कियों को अलग कर दें तो इसका अर्थ यह होगा कि यहाँ ग्रामीण महिलाओं के एक–चौथाई हिस्से ने साइकिल चलाना सीख लिया है और इन महिलाओं में से सत्तर हज़ार से भी अधिक महिलाओं ने 'प्रदर्शन एवं प्रतियोगिता' जैसे सार्वजनिक कार्यक्रमों में बड़े गर्व के साथ अपने नए कौशल का प्रदर्शन किया और अभी भी उनमें साइकिल चलाने की इच्छा जारी है। वहाँ इसके लिए कई 'प्रशिक्षण शिविर' चल रहे हैं।

भूमिका

ग्रामीण पुडुकोट्टई के मुख्य इलाकों में अत्यंत रूढ़िवादी पृष्ठभूमि से आई युवा मुस्लिम लड़कियाँ सड़कों से अपनी साइकिलों पर जाती हुई दिखाई देती हैं। जमीला बीवी नामक एक युवती ने जिसने साइकिल चलाना शुरू किया है, मुझसे कहा–"यह मेरा अधिकार है, अब हम कहीं भी जा सकते हैं। अब हमें बस का इंतज़ार नहीं करना पड़ता। मुझे पता है कि जब मैंने साइकिल चलाना शुरू किया तो लोग फ़ब्तियाँ कसते थे। लेकिन मैंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया।"

फातिमा एक माध्यमिक स्कूल में पढ़ाती हैं और उन्हें साइकिल चलाने का ऐसा चाव लगा है कि हर शाम आधा घंटे के लिए किराए पर साइकिल लेती हैं। एक नयी साइकिल खरीदने की उनकी हैसियत नहीं है। फातिमा ने बताया कि–"साइकिल चलाने में एक खास तरह की आज़ादी है। हमें किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। मैं कभी इसे नहीं छोडूँगी।" जमीला, फातिमा और उनकी मित्र अवकन्नी–इन सबकी उम्र 20 वर्ष के आसपास है और इन्होंने अपने समुदाय की अनेक युवतियों को साइकिल चलाना सिखाया है।

संबंधित व्यक्तियों की मुख्य बातें / मुख्य अंश

इस ज़िले में साइकिल की धूम मची हुई है। इसकी प्रशंसकों में हैं महिला खेतिहर मज़दूर, पत्थर खदानों में मज़दूरी करनेवाली औरतें और गाँवों में काम करनेवाली नर्सें। बालवाड़ी और आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, बेशकीमती पत्थरों को तराशने में लगी औरतें और स्कूल की अध्यापिकाएँ भी साइकिल का जमकर इस्तेमाल कर रही हैं। ग्राम सेविकाएँ और दोपहर का भोजन पहुँचाने वाली औरतें भी पीछे नहीं हैं। सबसे बड़ी संख्या उन लोगों की है जो अभी नवसाक्षर हुई हैं। जिस किसी नवसाक्षर अथवा नयी–नयी साइकिल चलाने वाली महिला से मैंने बातचीत की, उसने साइकिल चलाने और अपनी व्यक्तिगत आज़ादी के बीच एक सीमा संबंध बताया।

साइकिल आंदोलन की एक अगुआ का कहना है, "मुख्य बात यह है कि इस आंदोलन ने महिलाओं को बहुत आत्मविश्वास प्रदान किया। महत्वपूर्ण यह है कि इसने पुरुषों पर उनकी निर्भरता कम कर दी है। अब हम प्रायः देखते हैं कि कोई औरत अपनी साइकिल पर चार किलोमीटर तक की दूरी आसानी से तय कर पानी लाने जाती है। कभी–कभी साथ में उसके बच्चे भी होते हैं। यहाँ तक कि साइकिल से दूसरे स्थानों से सामान

मुख्य अंश

ढोने की व्यवस्था भी खुद ही की जा सकती है। लेकिन यकीन मानिए, जब इन्होंने साइकिल चलाना शुरू किया तो इन पर लोगों ने जमकर प्रहार किया जिसे इन्हें झेलना पड़ा। गंदी–गंदी टिप्पणियाँ की गईं लेकिन धीरे–धीरे साइकिल चलाने को सामाजिक स्वीकृति मिली। इसलिए महिलाओं ने इसे अपना लिया। [चुनौतियाँ]

साइकिल प्रशिक्षण शिविर देखना एक असधारण अनुभव है। किलाकुरुचि गाँव में सभी साइकिल सीखने वाली महिलाएँ रविवार को इकट्ठी हुई थीं। साइकिल चलाने के आंदोलन के समर्थन में ऐसे आवेग देखकर कोई भी हैरान हुए बिना नहीं रह सकता। उन्हें इसे सीखना ही है। साइकिल ने उन्हें पुरुषों द्वारा थोपे गए दायरे के अंदर रोज़मर्रा की घिसी–पिटी चर्चा से बाहर निकलने का रास्ता दिखाया। ये नव–साइकिल चालक गाने भी गाती हैं। उन गानों में साइकिल चलाने को प्रोत्साहन दिया गया है। इनमें से एक गाने की पंक्ति का भाव है–'ओ बहिना, आ सीखें साइकिल, घूमें समय के पहिए संग...'

जिन्हें साइकिल चलाने का प्रशिक्षण मिल चुका है उनमें से बहुत बड़ी संख्या में साइकिल सीख चुकी महिलाएँ अभी नयी–नयी साइकिल सीखने वाली महिलाओं को भरपूर सहयोग देती हैं। उनमें यहाँ न केवल सीखने–सिखाने की इच्छा दिखाई देती है बल्कि उनके बीच यह उत्साह भी दिखाई देता है कि सभी महिलाओं को साइकिल चलाना सीखना चाहिए। [साइकिल चलाने का प्रशिक्षण (जानकारियाँ)]

1992 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के बाद अब यह ज़िला कभी भी पहले जैसा नहीं हो सकता। हैंडल पर झंडियाँ लगाए, घंटियाँ बजाते हुए साइकिल पर सवार 1500 महिलाओं ने पुडुकोट्टई में तूफ़ान ला दिया। महिलाओं की साइकिल चलाने की इस तैयारी ने यहाँ रहनेवालों को हक्का–बक्का कर दिया। [अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (विशेष गतिविधि)]

इस सारे मामले पर पुरुषों की क्या राय थी? इसके पक्ष में 'आर. साइकिल्स' के मालिक को तो रहना ही था। इस अकेले डीलर के यहाँ लेडीज़ साइकिल की बिक्री में साल भर के अंदर काफी वृद्धि हुई। माना जा सकता है कि इस आँकड़े को दो कारणों से कम करके आँका गया। पहली बात तो यह है कि–ढेर सारी महिलाओं ने जो लेडीज़ साइकिल का इंतज़ार नहीं कर सकती थीं, जेंट्स साइकिलें खरीदने लगीं। दूसरे, उस डीलर ने बड़ी सतर्कता के साथ यह जानकारी मुझे दी थी–उसे लगा कि मैं बिक्री कर विभाग का कोई आदमी हूँ। [दूसरे पक्ष का दृष्टिकोण]

कुदिमि अन्नामलाई की चिलचिलाती धूप में एक अद्भुत दृश्य की तरह पत्थर के खदानों में दौड़ती–भागती बाईस वर्षीय मनोरमनी को लोगों ने साइकिल सिखलाते देखा। उसने मुझे बताया–"हमारा इलाका मुख्य शहर से कटा हुआ है। यहाँ जो साइकिल चलाना जानते हैं उनकी गतिशीलता बढ़ जाती है।"

साइकिल चलाने के बहुत निश्चित आर्थिक निहितार्थ थे। इससे आय में वृद्धि हुई है। यहाँ की कुछ महिलाएँ अगल–बगल के गाँवों में कृषि संबंधी अथवा अन्य उत्पाद बेच आती हैं। साइकिल की वजह से बसों के इंतज़ार में व्यय होने वाला उनका समय बच जाता है। खराब परिवहन व्यवस्था वाले स्थानों के लिए तो यह बहुत महत्वपूर्ण है। दूसरे, इससे इन्हें इतना समय मिल जाता है कि ये अपने सामान बेचने पर ज़्यादा ध्यान केंद्रित कर पाती हैं। तीसरे, इससे ये और अधिक इलाकों में जा पाती हैं। अंतिम बात यह है कि अगर आप चाहें तो इससे आराम करने का काफ़ी समय मिल सकता है। [सकारात्मक बिन्दु]

जिन छोटे उत्पादकों को बसों का इंतज़ार करना पड़ता था, बस स्टॉप तक पहुँचने के लिए भी पिता, भाई, पति या बेटों पर निर्भर रहना पड़ता था। वे अपना सामान बेचने के लिए कुछ गिने–चुने गाँवों तक ही जा

पाती थीं। कुछ को पैदल ही चलना पड़ता था। जिनके पास साइकिल नहीं है वे अब भी पैदल ही जाती हैं। फिर उन्हें बच्चों की देखभाल के लिए या पीने का पानी लाने जैसे घरेलू कामों के लिए भी जल्दी ही भागकर घर पहुँचना पड़ता था। अब जिनके पास साइकिलें हैं वे सारा काम बिना किसी दिक्कत के कर लेती हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि अब आप किसी सुनसान रास्ते पर भी देख सकते हैं कि कोई युवा–माँ साइकिल पर आगे अपने बच्चे को बैठाए, पीछे केरियर पर सामान लादे चली जा रही है। वह अपने साथ पानी से भरे दो या तीन बर्तन लिए अपने घर या काम पर जाती देखी जा सकती है।

अन्य पहलुओं से ज़्यादा आर्थिक पहलू पर ही बल देना गलत होगा। साइकिल प्रशिक्षण से महिलाओं के अंदर आत्मसम्मान की भावना पैदा हुई है यह बहुत महत्वपूर्ण है। फातिमा का कहना है–"बेशक, यह मामला केवल आर्थिक नहीं है।" फातिमा ने यह बात इस तरह कही जिससे मुझे लगा कि मैं कितनी मूर्खतापूर्ण ढंग से सोच रहा था। उसने आगे कहा–"साइकिल चलाने से मेरी कौन सी कमाई होती है। मैं तो पैसे ही गँवाती हूँ। मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं कि मैं साइकिल खरीद सकूँ। लेकिन हर शाम मैं किराए पर साइकिल लेती हूँ ताकि मैं आज़ादी और खुशहाली का अनुभव कर सकूँ।" पुडुकोट्टई पहुँचने से पहले मैंने इस विनम्र सवारी के बारे में कभी इस तरह सोचा ही नहीं था। मैंने कभी साइकिल को आज़ादी का प्रतीक नहीं समझता था।

साइकिल प्रशिक्षण की अहमियत

एक महिला ने बताया–"लोगों के लिए यह समझना बड़ा कठिन है कि ग्रामीण महिलाओं के लिए यह कितनी बड़ी चीज़ है। उनके लिए तो यह हवाई जहाज़ उड़ाने जैसी बड़ी उपलब्धि है। लोग इस पर हँस सकते हैं लेकिन केवल यहाँ की औरतें ही समझ सकती हैं कि उनके लिए यह कितना महत्वपूर्ण है। जो पुरुष इसका विरोध करते हैं, वे जाएँ और टहलें क्योंकि जब साइकिल चलाने की बात आती है, वे महिलाओं की बराबरी कर ही नहीं सकते।"

उपसंहार

– पी. साईनाथ

हस्ताक्षर

निम्नलिखित विषयों पर रिपोर्ट लिखें :

1. देश की महँगी होती व्यावसायिक शिक्षा।

2. आए दिन होती सड़क दुर्घटनाएँ।

चाँद और हॉकी

आसमान साफ़ था लेकिन अभी पूरा चाँद नहीं निकला था। पंजाब रेजिमेंट के खेल के मैदान में एक सिपाही खड़ा था। उसके हाथ में हॉकी की छड़ी और गेंद थी। उसे पूरा चाँद निकलने का इंतज़ार था। जैसे ही चाँद निकला, पूरा मैदान चाँदनी से नहा गया। सिपाही ने फ़ौरन हॉकी का अभ्यास शुरू कर दिया। दिन–भर फ़ौजी काम में व्यस्त रहने के कारण उसे हॉकी खेलने का समय नहीं मिलता था। इसलिए वह रात में खेल के मैदान में जा पहुँचता और चाँद के निकलते ही अकेले हॉकी और गेंद के साथ पूरे मैदान का चक्कर लगाता। इस फ़ौजी का नाम था– ध्यान सिंह। चाँदनी में भी हॉकी खेल लेने के कारण उसके साथी उसे ध्यानचंद पुकारने लगे थे।

इसी ध्यानचंद ने अपने जोश, लगन और कौशल से खेल की दुनिया में हलचल मचा दी थी। पूरे विश्व में हॉकी का सबसे अच्छा सेंटर–फ़ारवर्ड कहा जाने लगा। उनके द्वारा किए गए सटीक गोलों की बदौलत भारत ने 1928, 1932 और 1936 के ओलंपिक खेलों में हॉकी का स्वर्ण पदक जीता। वर्ष 1928 में एम्सटर्डम ओलंपिक में ध्यानचंद दुनिया

के सबसे ज़्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी रहे। उन्होंने पाँच मैच में चौदह गोल दाग़े थे। फ़ाइनल मैच में भारत का मुक़ाबला नीदरलैंड से था। ध्यानचंद बीमार थे इसलिए टीम के साथ–साथ पूरे देश को चिंता हो रही थी। मगर ध्यानचंद के आत्म–विश्वास में कोई कमी नहीं थी। उन्होंने बीमारी में ही मैच में भाग लिया। भारत ने नीदरलैंड को तीन गोल से हरा दिया। तीन में से दो गोल ख़ुद ध्यानचंद ने किए थे। उनके खेल पर टिप्पणी करते हुए एक

अख़बार ने लिखा था, 'ध्यानचंद हॉकी के खिलाड़ी नहीं, हॉकी के जादूगर हैं।'

वर्ष 1936 के ओलंपिक में भारत जर्मनी के ख़िलाफ़ खेल रहा था। जर्मनी के गोलकीपर टीटो ने जानबूझकर ध्यानचंद को ज़ोर की टक्कर मार दी। ध्यानचंद के दाँत टूट गए और उन्हें मैदान से बाहर जाना पड़ा। डॉक्टरों के मना करने के बावजूद वह हल्के–फुल्के इलाज के बाद मैदान में वापस आ गये। उन्होंने अपने साथी खिलाड़ियों से कहा, ''इस गोलकीपर को सबक़ सिखाना है।'' सभी ने सोचा शायद ध्यानचंद भी उस गोलकीपर को टक्कर मारकर घायल करेंगे। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। वह गोल करने के लिए आगे बढ़ते, गोलकीपर को चकमा देते और जब गोल पोस्ट और उनके बीच कोई भी नहीं रहता, तब गोल करने की बजाय गेंद लेकर वापस लौट जाते। ऐसा कई बार हुआ। गोलकीपर टीटो शर्म से पानी–पानी हो गया।

इस 'बदले' से हिटलर भी काफ़ी प्रभावित हुआ। कहते हैं उसने ध्यानचंद को अपने देश की नागरिकता, ढेर सारा धन और अपनी सेना में कर्नल का ओहदा देने का वायदा भी किया। ध्यानचंद मुस्कराए और बोले, ''मैं अपने देश के लिए खेलता हूँ, पैसे या रुतबे के लिए नहीं।''

देश हो या विदेश, हर जगह ध्यानचंद का सम्मान किया गया। फ़ौज ने पद की तरक़्क़ी दी। दिल्ली का राष्ट्रीय स्टेडियम उनके नाम पर है। उनका जन्मदिन राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है। देश का प्रतिष्ठित खेल अवार्ड 'ध्यानचंद अवार्ड' कहा जाता है। लंदन के इंडियन जिमख़ाना क्लब में हॉकी का एक मैदान उनके नाम पर है। वहाँ एक मेट्रो स्टेशन भी उनके नाम पर है। वियना में उनकी एक ऐसी मूर्ति स्थापित है जिसमें इनके चार हाथ हैं और चारों हाथों में एक–एक हॉकी स्टिक।

हॉकी के इस जादूगर का जन्म 29 अगस्त को इलाहाबाद में हुआ था, लेकिन बाद में ये झाँसी में बस गए। उन्होंने 16 वर्ष की आयु में ही फ़ौज में नौकरी कर ली थी और 51 वर्ष के हुए तो इस महान खिलाड़ी ने 3 दिसंबर 1979 को जीवन से विदा ले ली।

– शाहिद अनवर

चाँद और हॉकी

1. ध्यानचंद का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

मेजर ध्यानचंद का जन्म २९ अगस्त १९०५ ई० को इलाहाबाद में हुआ था।

2. ध्यान सिंह का नाम ध्यानचंद कैसे पड़ा?

ध्यान सिंह फौज में थे। दिन भर अपने फ़ौजी काम में व्यस्त रहने के कारण उन्हें रात में ही हॉकी खेलने का समय मिलता था। रात के समय वह चाँद की रोशनी में हॉकी खेलते थे। चाँद की रोशनी में हॉकी खेलने के कारण उनके साथी उन्हें ध्यानचंद के नाम से पुकारने लगे।

3. ध्यानचंद के बेहतरीन खेल के कारण कौन–कौन से वर्षों में भारत ने ओलम्पिक खेल में स्वर्ण पदक जीते?

ध्यानचंद के बेहतरीन खेल के कारण भारत ने १९२८ में, १९३२ में और १९३६ में ओलम्पिक खेलों के हॉकी स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता।

4. ''मैं अपने देश के लिए खेलता हूँ, पैसे या रुतबे के लिए नहीं'' ध्यानचंद ने हिटलर से ऐसा क्यों कहा? अपने शब्दों में लिखें।

जर्मनी के ख़िलाफ़ एक मैच में गोलकीपर टीटो को ध्यानचंद ने जिस तरह सबक़ सिखाया था वह देखकर हिटलर ध्यानचंद से काफ़ी प्रभावित हुआ। इसी वजह से हिटलर ने ध्यानचंद को जर्मनी की नागरिकता, ढेर सारा धन और जर्मनी की फ़ौज में कर्नल के पद का प्रस्ताव दिया, जो ध्यानचंद को मंज़ूर नहीं था। उसी प्रस्ताव के जवाब में ध्यानचंद ने कहा था- ''मैं देश के लिए खेलता हूँ, पैसे या रुतबे के लिए नहीं।''

5. दुनिया भर में ध्यानचंद को कैसे सम्मानित किया गया?

ध्यानचंद को अलग-अलग तरीक़ों से सम्मानित किया गया, जैसे- दिल्ली के राष्ट्रीय स्टेडियम का नाम मेजर ध्यानचंद स्टेडियम रखा गया। उनके जन्म-दिन को राष्ट्रीय खेल-दिवस के रूप में मनाया जाता है। प्रतिष्ठित खेल अवार्ड का नाम ''ध्यानचंद अवार्ड'' है। उन्हें ''हॉकी का जादूगर'' कहा गया। लंदन में हॉकी का एक मैदान ''ध्यानचंद'' के नाम पर है और वियना में चार हाथों में हॉकी लिए हुए ध्यानचंद की प्रतिमा है जो कि उनके सम्मानित होने का प्रमाण है।

6. 'शर्म से पानी–पानी होना', इस मुहावरे का अर्थ समझाते हुए दो नए वाक्य लिखें।

अर्थ - लज्जित होना, शर्मिन्दा होना।

वाक्य - पिताजी ने मेरी चोरी पकड़ ली, जिससे मैं शर्म से पानी-पानी हो गया।

वाक्य - टीम की अपेक्षा के विपरीत मैं शून्य पर आउट हो गया जिससे देश के सामने मैं शर्म से पानी-पानी हो गया।

7. 'हिटलर ने ध्यानचंद को कर्नल का ओहदा देने का वायदा किया।' रेखांकित शब्द की जगह ऐसा कोई शब्द लें जिससे कि वाक्य का अर्थ वही रहे।

''ओहदा'' के स्थान पर ''पद'' लिखा जा सकता है।

वाक्य - हिटलर ने ध्यानचंद को कर्नल का पद देने का वायदा किया।

8. जर्मनी के गोलकीपर से बदला लेने के लिए ध्यानचंद गेंद लेकर जर्मनी के गोल पोस्ट तक गए, गोलकीपर को चकमा दिया मगर गोल करने के बजाए गेंद लेकर वापस आ गए क्योंकि ....

(i) ध्यानचंद ऑफ़ साईड हो गए थे। ☐

(ii) ख़ाली गोलपोस्ट देखकर ध्यानचंद घबरा गए थे। ☐

(iii) वह गोलकीपर को सबक़ सिखाना चाहते थे। ☑

तर्क : इस पाठ में कहीं भी यह नहीं लिखा है कि ध्यानचंद ऑफ़ साइर्ड हुए थे या मैच में वह घबरा गए थे। उन्होंने यह तय कर लिया था कि गोलकीपर को सबक़ सिखना है। सबक़ सिखाने का उनका यह अच्छा तरीक़ा था।

9. यह कहानी थोड़ी बड़ी है, इसे सात से आठ वाक्यों में लिखें।

ध्यानचंद का जन्म २९ अगस्त १९०५ ई को इलाहाबाद में हुआ। वह फौज में नौकरी करते थे और रात में वहीं हॉकी का अभ्यास भी करते थे। चाँदनी रात में खेलने की वजह से ही उनका नाम ध्यान सिंह से ध्यानचंद पड़ गया। उनके द्वारा किए गए सटीक गोलों की बदौलत भारत ने १९२८, १९३२ और १९३६ के ओलंपिक खेलों में स्वर्ण पदक जीता। एक बार हिटलर ने उन्हें अपने देश की नागरिकता, ढेर सारा धन और अपनी सेना में कर्नल का ओहदा देने का वायदा किया था। ध्यानचंद ने यह कहकर प्रस्ताव ठुकरा दिया कि 'मैं अपने देश के लिए खेलता हूँ, पैसे या रुतबे के लिए नहीं।' इन्हें हॉकी का जादूगर भी कहा जाता है।

आइये, शुरू करें

टेलिविजन धारावाहिक 'कौन बनेगा महाकरोड़पति?' का मौसम है। इसके साथ ही 'स्लमडॉग मिलियनायर' फ़िल्म की याद ताज़ा हो गई है। फिल्म में झोंपड़पट्टी में रहने वाला जमाल करोड़पति बनने के लिए पूछे गए सभी सवालों के जवाब आसानी से दे देता है। बाद में पुलिस के पूछने पर वह यह भी बता देता है कि उसे ये जवाब कैसे मालूम हुए। इस फ़िल्म के लेखक का कहना था कि उसे यह कहानी मुम्बई की झोंपड़पट्टी में रहने वाले एक लड़के से मिलकर सूझी थी।

ख़ैर, कहानी का सन्देश यह था कि उचित अवसर मिल जाए, तो झुग्गी–बस्तियों में रहने वाले बच्चे भी बड़े–बड़े काम कर सकते हैं। कई बच्चों ने ऐसे मौक़े मिलने पर बड़े–बड़े काम भी किए हैं। कहीं रिक्शा चलाने वाले नारायण जैसवाल के बेटे ने आई.ए.एस. की परीक्षा पास की, तो कहीं किसी आम परिवार की बेटी मलावाथ पूर्णा ने सिर्फ़ 13 साल की उम्र में एवरेस्ट पर्वत पर देश का झंडा लहरा दिया।

एक ज़माना वह भी था, जब कुछ विशेष जाति या विशेष वर्ग के बच्चों को ही पढ़ने का अधिकार था। दूसरे बच्चे पढ़ाई के बारे में सोच भी नहीं सकते थे। कुछ जातियों के बाहर का कोई भी व्यक्ति ज्ञान की बात सुन भी नहीं सकता था। यूरोप और एशिया में तो गुलाम ख़रीदे और बेचे जाते थे। उस ज़माने में कोई बराबरी के बारे में सोचता भी नहीं था। लेकिन तब भी कुछ बहादुर और बलिदानी लोगों ने यह तो कह ही दिया कि भगवान के लिए सब बराबर हैं। समानता के लिए संघर्ष की यह पहली सीढ़ी थी। दूसरी सीढ़ी के लिए यूरोप में नवजागरण और विज्ञान के उदय का इंतज़ार करना पड़ा। इसे मुमकिन बनाने में भारतीय, यूनानी और अरबों की विशेष भूमिका रही। आज हम जिस जनतंत्र की बातें करते हैं, वह फ़्रांसीसी क्रांति (1787–99) की देन है। फ़्रांसीसी क्रांति का नारा था – 'समानता, आज़ादी और भाईचारा'। इसके बाद से ही मानव अधिकारों और व्यक्ति की आज़ादी के साथ–साथ ग़रीबी ख़त्म करने और सब को समान अवसर मिले इसके लिए संघर्ष होते रहे हैं।

अब हालात पहले से कुछ बेहतर हैं, लेकिन अभी भी कई तरह की असमानताएँ हैं। इन्हें जड़ से मिटाना इतना आसान तो नहीं, लेकिन निरंतर प्रयास तो करना ही पड़ेगा।

– देवेन्द्र चिंतन

आइये, शुरू करें

प्र 1. फ्रांसीसी क्रान्ति का नारा क्या था?

प्र 2. स्लमडॉग मिलेनियर फ़िल्म की कहानी का संदेश क्या था?

प्र 3. कौन बनेगा महाकरोड़पति का संचालन कौन करते हैं? उनके नाम लिखें।

प्र 4. 'संघर्ष' शब्द का अर्थ अपने शब्दों में समझाएँ।

प्र 5. 'जनतंत्र' शब्द को अपने शब्दों में समझाएँ और एक नया वाक्य भी बनाएँ।

प 6. फ़्रांसीसी क्रन्ति क्या थी? अपने शब्दों में लिखें।

प्र 7. यूरोप और एशिया में गुलाम खरीदे और बेचे क्यों जाते थे? अपने शिक्षकों से बात करके जानें और लिखें।

प्र 8. आपको क्या लगता है कि असमानता मिटाने के लिए कहाँ से शुरुआत करना चाहिए? अपनी राय बताएँ।

प्र 9. समानता के लिए संघर्ष की पहली सीढ़ी क्या थी?

(i) सबको अपनी जिम्मेदारी लेना। ☐

(ii) सबको पढ़ने का अधिकार मिलना। ☐

(iii) बहादुर और बलिदानी लोगों का यह कहना कि भगवान के लिए सब बराबर है ☐

प्र 10. इस पाठ में इन दो वाक्यों को देखें – सभी सवाल के जवाब आसानी से दे देता है। झुग्गी–बस्तियों में रहने वाले बच्चे भी बड़े–बड़े काम कर सकते हैं।

'आसानी' और 'बड़े–बड़े' शब्द क्रिया की विशेषता बतला रहे हैं, ये शब्द क्रिया विशेषण हैं।

अर्थात जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं वे क्रिया–विशेषण कहलाते हैं। क्रिया–विशेषण के कुछ उदाहरण ये हैं – 'घड़ी–घड़ी', कई बार, हमेशा, थोड़ा–थोड़ा, वास्तव में, सचमुच, अवश्य आदि।

निम्नलिखित क्रिया विशेषणों का उचित प्रयोग करते हुए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

अगले दिन, कम समय में, कुछ देर बाद, सुबह तक

(क) मैं .... यह कार्य कर लूँगा।

(ख) बादल घिरने के .... ही वर्षा हो गई।

(ग) उसने बहुत .... इतनी तरक्की कर ली।

(घ) नाड.केसा को .... गाँव जाना था।

तेरी शहनाई बोले

गंगा के पवित्र तट पर बने बनारस के बालाजी मंदिर की सीढ़ी से गंगा का घाट बोला, ''बहन, वह भी क्या दिन थे! संगीत, सुर, नमाज़, पूजा, अल्लाह, भगवान को एक मानने वाले भारतरत्न उस्ताद बिस्मिल्ला ख़ाँ की शहनाई से सुबह–शाम मंदिर की आरती होती थी।''

मंदिर की सीढ़ी बताने लगी, ''भैया उस शहनाई सम्राट ने बिहार के डुमरांव के क़िले में बिहारी जी मंदिर में पहली बार शहनाई मुंह से लगायी थी।''

घाट ने अचरज से पूछा, ''बिहार में क्यों बहन? बनारसी मिज़ाज़ में रचे–बसे उस्ताद बिस्मिल्ला खां इसी पुण्यनगरी, वाराणसी के बेनिया बाबा मुहल्ले की गली में तो रहते थे। दुनिया के लगभग सभी बड़े शहरों में ठेठ हिन्दुस्तानी कुर्ता–पजामा में शहनाई बजाकर आये खां साहब को अमेरिका में बसने का न्यौता मिला था। लेकिन अपने शहर और गंगा मईया को न छोड़ पाने के कारण इनकार कर देने वाले उस्ताद की शहनाई पहली बार बिहार में क्यों बजी? बनारस में मन्दिर नहीं थे क्या?''

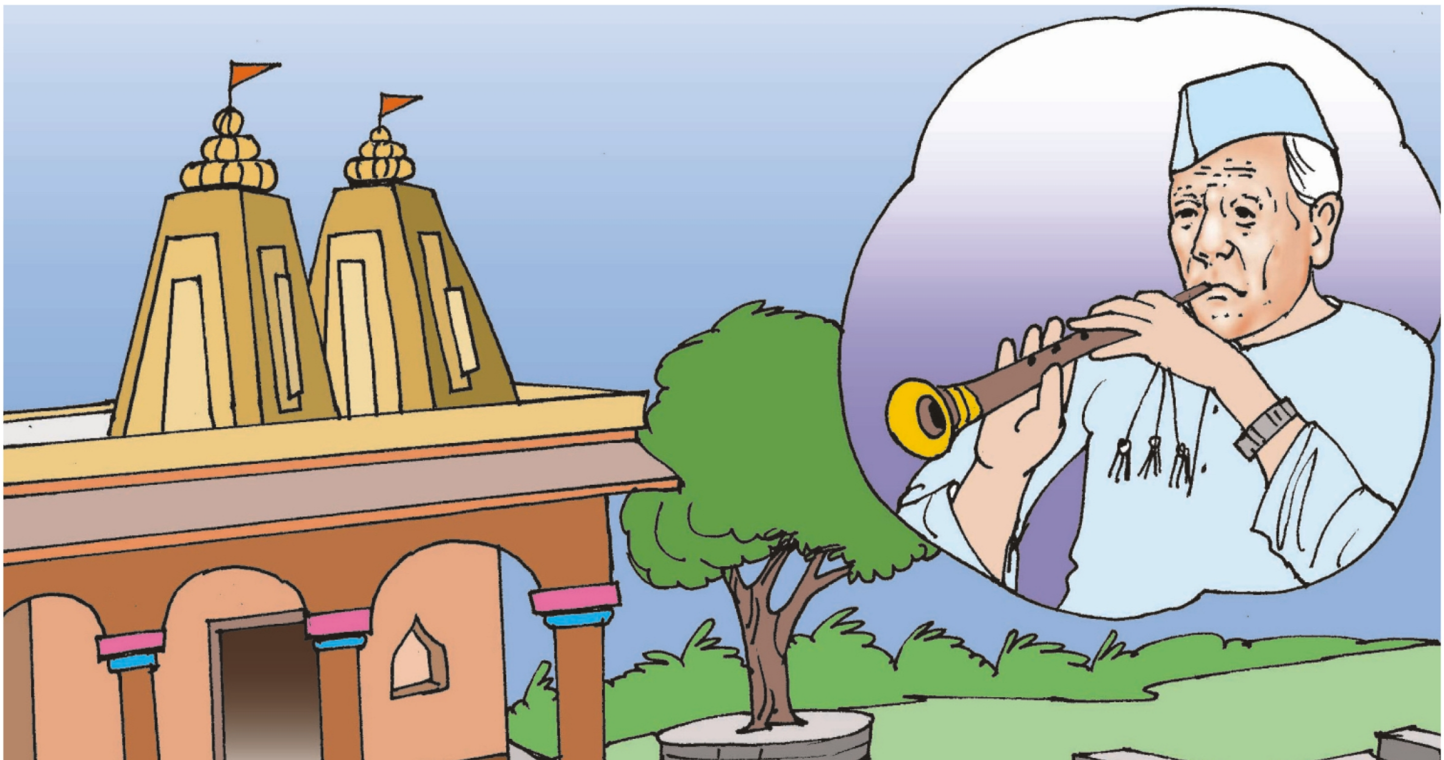

मन्दिर की सीढ़ी मुस्करायी, फिर बताने लगी, ''बहुत कम लोग यह जानते हैं भैया कि बिहार राज्य के बक्सर ज़िले के डुमरावनगर के बंधन पट्टवा मुहल्ले में बचई मियां उर्फ़ पैगम्बर बक्श खां का आंगन 21 मार्च 1916 ई0 को कमरूद्दीन के जन्म से धन्य हो गया था। बालक के पैदा होते ही, अल्लाह को शुक्रिया अदा करते हुए दादा रसूल बक्श खाँ ने पहले 'बिस्मिल्ला' शब्द कहा था। उनका यही नाम दुनिया में मशहूर हो गया। परन्तु शहनाई के इस बादशाह के सिर से माँ का साया पाँच वर्ष की छोटी उम्र में ही उठ गया। नई माँ ने उन्हें अच्छे ढंग से पाला। तीन भाइयों तथा दो बहनों में वे सबसे बड़े थे।''

गंगा का घाट अफ़सोस करते हुए बोला, ''सुर की साधना मुश्किल है, बहन। सचमुच, 'है सबसे हसीन वह गीत, जिसे हम दर्द के सुर में गाते हैं।' ख़ां साहब के दो मामा विलायत हुसैन खां और अली बक्श खां बनारस में संगीत के बहुत बड़े जानकार थे। काशी विश्वनाथ मंदिर में शहनाई बजाया करते थे। ऐसे अच्छे गुरू के साथ मंदिर के एक कमरे में खां साहब घंटों रियाज़ करते थे। सचमुच सच्चे संगीत सुनने वाले के मन को शांति और गाने वाले को तृप्ति मिलती है।''

ठंडी सांस छोड़ते हुए सीढ़ी बोली, ''आह, भैया एक बार फिर, उस्ताद के पसंदीदा रागों में, 'मारू बिहाग', 'बागेश्वरी', 'जय जयवंती', 'भूप', 'ललित', 'केदार', 'रागेश्वर', 'गोरख कल्याण' या अधिक पसंदीदा राग 'मालकौंस' की गूंज जादू दिखाती है। सन् 1948 में 15 अगस्त को लाल क़िले में उनके शहनाई वादन ने पूरे हिन्दुस्तान का मन मोह लिया था।''

घाट ने आह भरते हुए कहा, ''उनकी शहनाई पर कभी मातमी धुनों में 'शीहदाने–ए–कर्बला' का आंसुओं भरा दर्दनाक नज़राना तो कभी गंगा पूजन में 'गंगा दुआरे बधइया बाजे' की झूमती धुन होती थी। बाबा विश्वनाथ का आंगन उस्ताद की शहनाई से भक्तिमय होकर 'हर–हर महादेव' से गूंज उठता था। मानो बाबा जाग गये हों। वे भी क्या दिन थे, बहन।'' दोनों चुप थे। सन्नाटा छाया रहा। फिर सीढ़ी बोल उठी, ''भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्ला खां के पुरस्कार व सम्मान का सिलसिला 1956 से चलता रहा। पद्मश्री, पद्मभूषण, राष्ट्रीय संगीत रत्न, 2003 में बिहार गौरव आदि कितने ही पुरस्कार, सम्मान मिलते रहे उन्हें।''

गंगा का घाट बोल उठा, ''बिहार की माटी में उपजे, दुनिया के अमर संगीतकार उस्ताद बिस्मिल्ला खां और उनकी शहनाई को गंगा किनारे के सभी घाटों और मंदिरों का सलाम।''

–पूर्णिमा बाला श्रीवास्तव

तेरी शहनाई बोले

प्र.1. बिस्मिल्ला ख़ाँ के पसन्दीदा राग कौन से थे ?

प्र.2. बिस्मिल्ला ख़ाँ किस प्रकार की धुनों पर शहनाई बजाते थे?

प्र.3. इस पाठ से ऐसे दो वाक्य ढूँढ कर लिखें जिनसे पता चलता है कि लोगों को उनका संगीत बहुत पसंद था।

प्र.4. कमरूद्दीन किस नाम से मशहूर हुए और उनका वह नाम कैसे पड़ा?

प्र.5. बनारस में रहने वाले बिस्मिल्ला ख़ाँ ने पहली बार शहनाई बिहार में क्यों बजाई ?

प्र.6. 'मानो बाबा जाग गये हों'। इसका क्या अर्थ है और इसका प्रयोग कहानी में किस संदर्भ में हुआ है?

प्र.7. भारतरत्न क्यों मिलता है ? पता करके ऐसे तीन लोगों का नाम लिखें जिनको भारतरत्न मिला हो।

प्र.8. शहनाई के इस बादशाह के सिर से माँ का साया पाँच वर्ष की छोटी उम्र में ही उठ गया।

रेखांकित वाक्यांशों का अर्थ समझाएँ और इनसे नए वाक्य बनाएँ।

प्र.9. नीचे दी गई बातों का ध्यान में रखते हुए अपने मन पसंद संगीतकार के बारे में कुछ लिखें।

1. उनका जन्म और बचपन 2. उनकी खास उपलब्धियाँ 3. उनके जीवन की मुख्य घटनाएँ।

प्र.10. बिसमिल्ला खां को कहाँ जाने का न्यौता मिला था?

(i) दिल्ली में बसने का। ☐

(ii) अमेरिका में बसने का। ☐

(iii) वाराणसी में बसने का। ☐

प्र.11. इस कहानी में कई स्थानों पर मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग किया गया है। आप इन्हें ढूँढे और आसान शब्दों में इनका अर्थ समझाएँ।

अक्षरों का इतिहास

हमारे आस–पास की दुनिया में बहुत–सी चीज़ें लिखी हुई होती हैं। हर भाषा में शब्द होते हैं जो अक्षरों से बनते हें। ये अक्षर आख़िर कहाँ से आए? ये इसी प्रकार के क्यों हैं? किसी और प्रकार के क्यों नहीं हैं?

जब मैं अपनी माँ से ये सवाल करता था, तो वह ठीक–ठीक जवाब नहीं दे पाती थीं। शायद अतीत में झाँकने पर इन सवालों का बेहतर उत्तर मिल जाए! भारत में सबसे पुराना लिखा हुआ क्या मिलता है? वे अक्षर किस प्रकार के हैं?

सबसे पुराने लिखित अक्षर हमें हड़प्पा से प्राप्त मुहवरों पर मिलते हैं। इन अक्षरों को हम पढ़ नहीं पाते। इस कारण हड़प्पा के बारे में हमारी जानकारी अधूरी रह जाती हैं। यहाँ हड़प्पा अक्षरों के कुछ नमूने हैं :

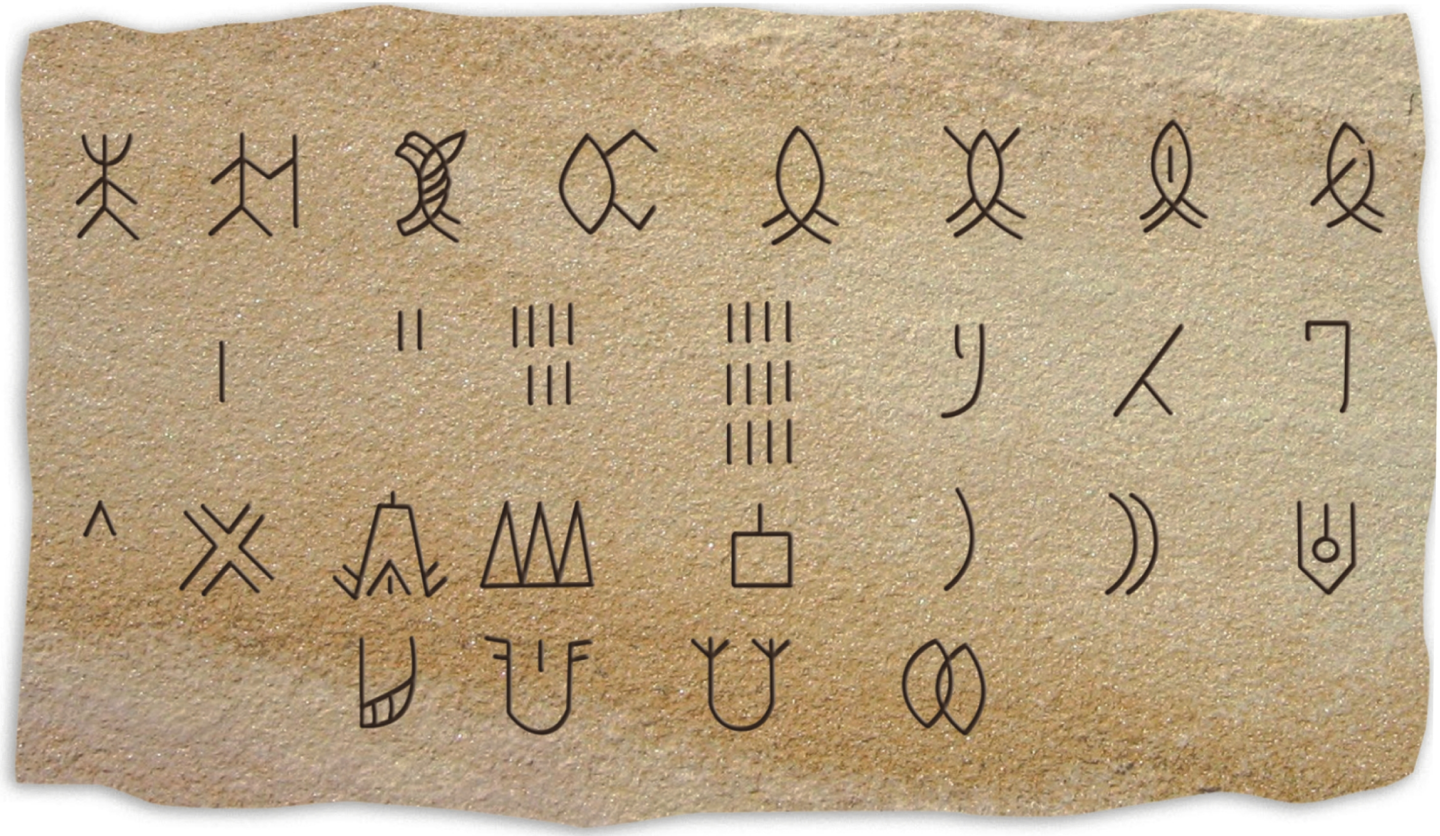

विद्वानों का मानना है कि लेखन के इस तरीक़े में अक्षरों को दाएँ से बाएँ की तरफ़ लिखा जाता था। हिंदी एवं अंग्रेज़ी के अक्षरों को लिखने के ढंग से उलटा। हड़प्पा के अक्षरों के बाद जो लिखित अक्षर हमें मिलते हैं, वे हैं – अशोक के बड़े–बड़े अभिलेख। मौर्य वंश के इस राजा ने पूरे देश भर में अपने संदेशों को बड़े–बड़े पत्थरों पर खुदवाया। पत्थरों पर ही क्यों खुदवाया इस सवाल का जवाब आप लोग खुद ही तय कीजिए। इन अक्षरों को ब्राह्मी लिपि का अक्षर कहा जाता है। इसके नमूने निम्न हैं :

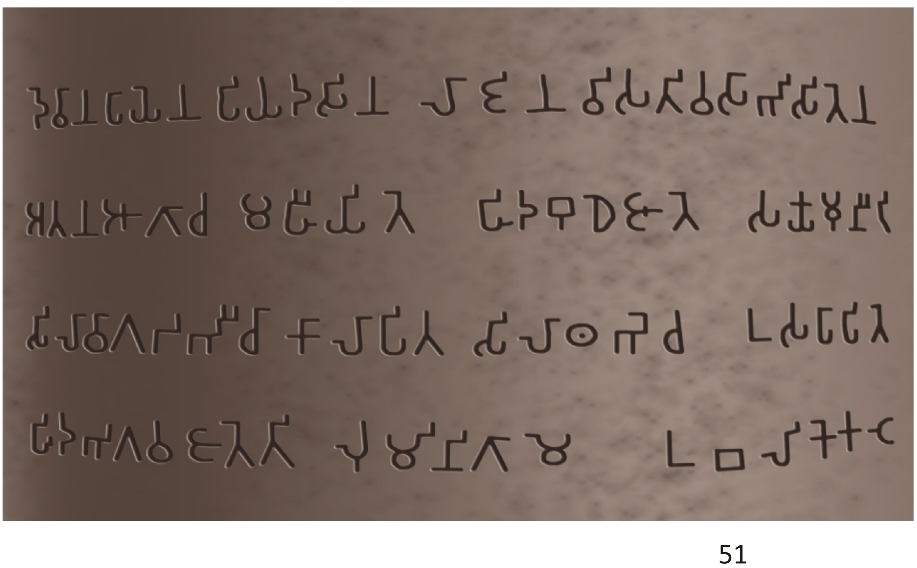

पहला चित्र अशोक के स्तम्भ से लिया गया है। दूसरा चित्र इसे पढ़ने योग्य बनाने के पश्चात् का है। जैसा कि आप देख रहे हैं ये अक्षर भी हमसे अपरिचित ही दिख रहे हैं। केवल कुछ विशेषज्ञ ही इन अक्षरों को पढ़ पाते हैं। इन अक्षरों को

पढ़ना भी हम भूल चुके थे। परन्तु एक विद्वान ने अपनी अनथक कोशिशों की बदौलत 1838 में इन अक्षरों की पहचान कर ली। इस प्रकार अशोक के अभिलेखों पर लिखें संदेशों से हम अवगत हो पाए। ये अक्षर निम्न थे :

ब्राह्मी लिपि के ये अक्षर ही समय के साथ बदलते गए और वर्तमान समय में लिखी जाने वाली अनेक भाषाओं की लिपियाँ (यानी अक्षरों के प्रकार) विकसित हुईं।

Velars	DEV	GUJ	PUN	BEN	ORI	TIB	TEL	KAN	TAM	MAL	SIN	TIB	LAO	THA	KHM
k	क	ક	ਕ	ক	କ	ཀ	క	ಕ	க	ക	ක	က	ກ	ก	ក
kh	ख	ખ	ਖ	খ	ଖ	ཁ	ఖ	ಖ	–	ഖ	ඛ	ခ	ຂ	ข	ខ
g	ग	ગ	ਗ	গ	ଗ	ག	గ	ಗ	–	ഗ	ග	ဂ	ຄ	ค	គ
gh	घ	ઘ	ਘ	ঘ	ଘ	–	ఘ	ಘ	–	ഘ	ඝ	ဃ	–	ฆ	ឃ
n	ङ	ઙ	ਙ	ঙ	ଙ	ང	ఙ	ಙ	ங	ങ	ඞ	င	ງ	ง	ង

— चन्द्रभान

अक्षरों का इतिहास

प्र.1. हड़प्पा अक्षरों के कुछ नमूने से पता चलता है कि अक्षरों को दाएँ से बाएँ की तरफ़ लिखा जाता था। सोचकर बताएँ कि और कौन–सी लिपि दाएँ से बाएँ लिखी जाती हैं?

प्र.2. हड़प्पा के अक्षरों के बाद जो लिखित अक्षर मिले, उसे क्या कहते हैं?

प्र.3. किस वंश के राजा ने अपने संदेशों को बड़े–बड़े पत्थरों पर खुदवाया था?

प्र.4. सोचकर बताएँ कि पुराने ज़माने में पत्थरों पर ही क्यों लिखा जाता था?

प्र.5. वर्तमान समय में लिखी जाने वाली देवनागरी लिपि किस लिपि का विकसित रूप है?

प्र.6. निम्न शब्दों के अर्थ समझाते हुए एक–एक वाक्य बनाएँ।

विद्वान :

विशेषज्ञ :

अभिलेख :

प्र.7. इस पाठ में आप को सबसे महत्वपूर्ण जानकारी क्या लगी? कारण भी बताएँ।

प्र.8. सबसे पुराने लिखित अक्षर कहाँ दिखाई दिए?

प्र.9. सोचकर बताएँ कि आजकल जो अक्षर हम लिखते है, वह कहाँ से आए?

उस्ताद की बात

बड़े ज़ोर–शोर के साथ तैयारी चल रही थी। किसी रईस के घर संगीत–समारोह होने वाला था। ऐसा–वैसा संगीत नहीं, शास्त्रीय संगीत। देवी–देवताओं को प्रिय! राजा–महाराजाओं की पसंद!! और कोलकता शहर के नए–नए अमीरज़ादों के कानों में रस घोलने वाला शास्त्रीय संगीत!! तान, गमक, मूर्च्छना, मीड़ जैसे अलंकारों से सजा पारंपरिक संगीत। वहाँ सिर्फ़ संगीत ही नहीं, ख़ातिरदारी के लिए और भी बहुत कुछ मौजूद था– केवड़ा, गुलाबजल, फूलों की पंखुड़ियाँ, तरह–तरह के कबाब और खाने–पीने की ऐसी–ऐसी चीज़ें, जिनका नाम बाप–दादा तक ने नहीं सुना हो। चारों ओर झकझक करती क़ंदीलें, रोशनी–ही–रोशनी जैसे, दीवाली हो। संगीत के बड़े–बड़े जानकार, गंभीर चेहरे, महाराजा, उनकी मित्र–मण्डली, महाराजा के मुसाहिब, मुसाहिबों का परिवार–चमक–दमक, साज़–सिंगार, हीरा–पन्ना, झुमका–गहना। आख़िर उस्ताद जी आने वाले थे।

ऐन वक़्त पर भीड़ से निकला एक बाऊल। फटा–पुराना, ढीला–ढाला लिबास। आकर बैठ गया बिल्कुल अगली पंक्ति में। चीख़–पुकार मच गई, ''अरे, अरे यह क्या? पीछे जाओ, पीछे! यहाँ से उठो, हटो।'' बाऊल बोला, ''ऊँचा सुनता हूँ सो आगे बैठ गया। संगीत ही तो सुनाया जाएगा भैया, फिर यहीं क्यों न बैठूँ?''

''अरे यह तुम्हारे टुनटुनाने वाले एकतारा का संगीत नहीं है। यहाँ शास्त्रीय संगीत पेश किया जाएगा यानी

छह राग, छत्तीस रागिनियाँ और फिर उपराग, उपरागिनियाँ।''

''समझ गया भाई, समझ गया! मगर ये राग–रागिनियाँ इंसानों ने ही बनाई हैं न, और इंसानों के लिए ही बनाई हैं न?'' बाऊल ने पूछा। इसी हंगामे के बीच उस्ताद जी ने प्रवेश किया। एक नज़र डालते ही वह समझ गए कि मामला क्या है? उन्होंने बाऊल की ओर देखा और इशारे से समझाया कि जहाँ बैठा है, वहीं बैठा रहे। फिर अपने श्रोताओं को संबोधित किया, ''आज ख़्याल–ध्रुपद को रहने देते हैं, थोड़ी गपशप करते हैं। आज बात करते हैं कि किस तरह पशु–पक्षियों की आवाज़ से सुर बने। कैसे मिट्टी से जुड़ा संगीत, शास्त्रीय संगीत में ढल जाता है।'' यह कहकर उस्ताद जी ने आवाज़ें निकालना शुरू कर दिया और हाथी की आवाज़ से बन गया 'नि', कोयल की कूक से 'पा' और बकरे के स्वर से 'गा'। इसी तरह गुर्जर जाति का लोकगीत राग 'गुजरी टोड़ी' के रूप में ढल गया और ग्वालों का गीत बन गया 'अहीर भैरव'।

पूरा माहौल 'वाह–वाह' से गूँज उठा। बाऊल ख़ामोश रहा। अब उस्ताद जी के गले से निकला राग झिंझोटी जो धीरे–धीरे पिघलते हुए बाऊल गीत बन गया। पूरी सभा में सन्नाटा फैल गया। उस्ताद जी की आँखें हुईं नम, बाऊल की आँखों से बहने लगे ख़ुशी के आँसू। गीत ख़त्म हुआ तो उस्ताद जी उठ खड़े हुए। बाऊल को पास बुलाया और गले से लगा लिया। बोले, ''दोस्त! इन्हें समझाने का और कोई रास्ता नहीं था मेरे पास। इन्हें समझाता तो कैसे समझाता कि संगीत का साम्राज्य नहीं होता, संगीत का संसार होता है जहाँ सब एक हैं, सब एक!''

– शक्तिब्रता सेन

उस्ताद की बात

प्र.1. क्या कहकर लोगों ने बाऊल को पीछे जाने को कहा?

प्र.2. उस्ताद जी ने गपशप करने का क्यों सोचा और उन्होंने किस तरह की गपशप की ?

प्र.3. संगीत समारोह के लिए क्या–क्या व्यवस्था की गई थी?

प्र.4. अपनी गपशप से उस्ताद जी सबको क्या बताना चाहते थे?

प्र.5. शास्त्रीय संगीत किन–किन आवाज़ों और रागों से बना है?

प्र.6. बाऊल के अगली पंक्ति में बैठने से सभी लोगों को एतराज़ क्यों था ? अपने शब्दों में लिखें।

प्र.7. ''संगीत का साम्राज्य नहीं होता, संगीत का संसार होता है।'' उस्ताद जी ने ऐसा क्यों कहा, अपने शब्दों में लिखें।

प्र.8. 'चारों ओर झकझक करती **कंदीलें**'।

रेखांकित शब्द का अर्थ बताएँ। अब इसी शब्द से एक नया वाक्य बनाएँ।

प्र.9. 'उस्ताद जी की **आँखें हुई नम**'।

रेखांकित वाक्यांश का अर्थ अपने शब्दों में लिखें और एक नया वाक्य बनाएँ।

प्र.10. इस पूरी कहानी का सार चार–पाँच वाक्यों में लिखें।

प्र.11. कई बार वाक्य में क्रिया के होते हुए भी उसका मतलब समझ में नहीं आता। ऐसी क्रियाएँ अपूर्ण क्रिया कहलाती है, जैसे – दादा जी थे। तुम हो। ये क्रियाएँ अपूर्ण क्रियाएँ हैं। अगर इन वाक्यों को थोड़ा–सा बदल दें, इस तरह से – दादाजी पड़ोस में थे या रहते थे और तुम बुद्धिमान हो। इन वाक्यों में, 'पड़ोस में' या 'पड़ोस में रहते थे' और 'बुद्धिमान' से वाक्य में स्पष्टता आ गई। ये सभी पूरक शब्द हैं। अपूर्ण क्रिया के अर्थ को पूरा करने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है उन्हें पूरक कहते हैं।

इस कहानी/पाठ में अगर कहीं अपूर्ण क्रिया आया हो तो उन्हें ढूँढ कर निकालें।

दुःख का अधिकार

एक आदमी ने घृणा से एक तरफ़ थूकते हुए कहा, ''क्या ज़माना है! जवान लड़के को मरे पूरा दिन नहीं बीता और यह बेहया दुकान लगा के बैठी है।''

दूसरे साहब अपनी दाढ़ी खुजाते हुए कह रहे थे, ''अरे जैसी नीयत होती है अल्लाह भी वैसी ही बरकत देता है।''

सामने के फुटपाथ पर खड़े एक आदमी ने दिया–सलाई की तीली से कान खुजाते हुए कहा, ''अरे, इन लोगों का क्या है? ये कमीने लोग रोटी के टुकड़े पर जान देते हैं। इनके लिए बेटा–बेटी, ख़सम–लुगाई, धर्म–ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।''

परचून की दुकान पर बैठे लाला जी ने कहा, ''अरे भाई, उनके लिए मरे–जिए का कोई मतलब न हो, पर दूसरे के धर्म–ईमान का तो ख़्याल करना चाहिए! जवान बेटे के मरने पर तेरह दिन का सूतक होता है और वह यहाँ सड़क पर बाज़ार में आकर खरबूज़े बेचने बैठ गई है। हज़ार आदमी आते–जाते हैं। कोई क्या जानता है कि इसके घर में सूतक है। कोई इसके खरबूज़े खा ले तो उसका ईमान–धर्म कैसे रहेगा? क्या अँधेर है!''

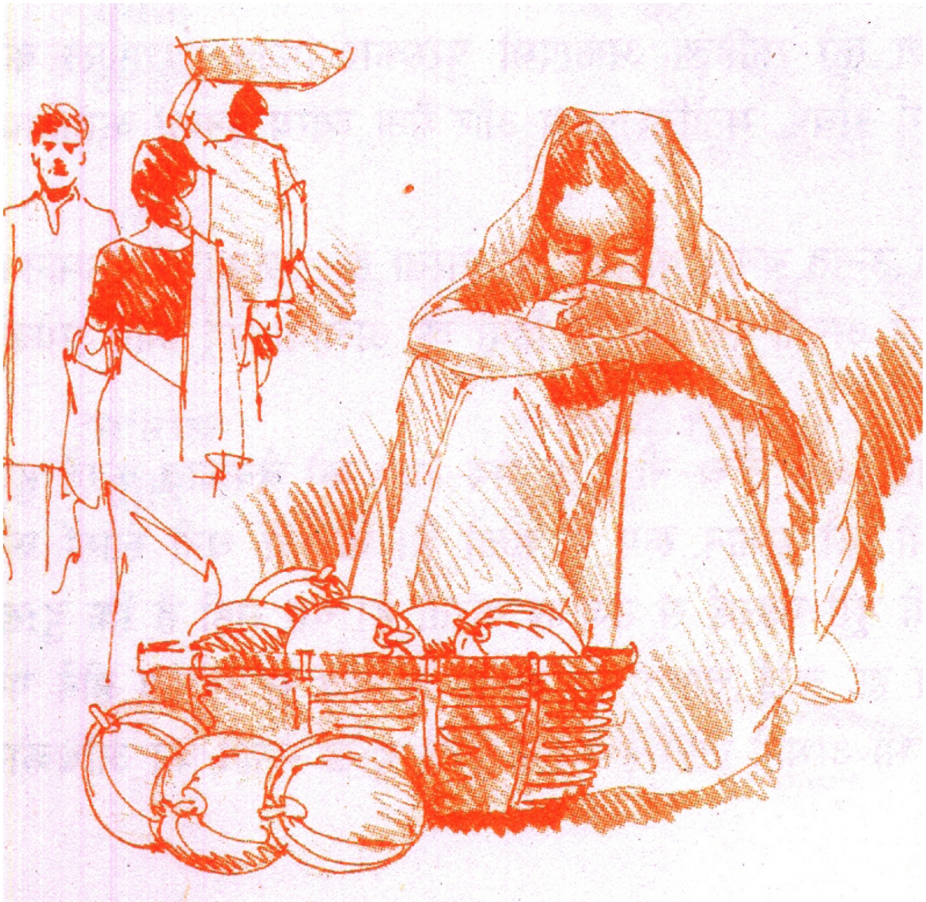

पास–पड़ोस की दुकानों से पूछने पर पता लगा– उसका तेईस बरस का जवान लड़का था। घर में उसकी बहू और पोता–पोती हैं। लड़का शहर के पास डेढ़ बीघा भर ज़मीन में कछियारी करके परिवार का निर्वाह करता था। ख़रबूज़ों की डलिया बाज़ार में पहुँचाकर कभी लड़का स्वयं सौदे के पास बैठ जाता, कभी माँ बैठ जाती।

लड़का परसों सुबह मुँह–अँधेरे बेलों में से पके खरबूज़े चुन रहा था। गीली मेड़ की तरावट में विश्राम करते हुए एक साँप पर लड़के का पैर पड़ गया। साँप ने लड़के को डस लिया।

लड़के की बुढ़िया माँ बावली होकर ओझा को बुला लाई। झाड़ना–फूँकना हुआ। नागदेव की पूजा हुई। पूजा के लिए दान–दक्षिणा चाहिए। घर में जो कुछ आटा और अनाज था, दान–दक्षिणा में उठ गया। माँ, बहू और बच्चे 'भगवान' से लिपट–लिपटकर रोए, पर भगवान जो एक दफे चुप हुआ तो फिर न बोला। सर्प के विष से उसका सब बदन काला पड़ गया था।

ज़िंदा आदमी नंगा भी रह सकता है, परंतु मुर्दे को नंगा कैसे विदा किया जाए? उसके लिए तो बजाज की दुकान से नया कपड़ा लाना ही होगा, चाहे उसके लिए माँ के हाथों के छन्नी–ककना ही क्यों न बिक जाए।

– यशपाल

दु:ख का अधिकार

प्र.1. ख़रबूज़े बेचती स्त्री को लोगों ने क्या कहा?

प्र.2. बूढ़िया के बेटे की मृत्यु कैसे हुई?

प्र.3. अपने बेटे की मृत्यु वाले दिन भी बूढ़ी औरत के खरबूजे बेचने का क्या कारण था?

प्र.4. कहानी में लोगों के नज़रिए से आप सहमत हैं? हाँ या नहीं, कारण सहित बताएँ।

प्र.5. ''जैसी नीयत होती है वैसी ही अल्लाह की बरकत।'' इस वाक्य से आप क्या समझते हैं? अपने शब्दों में लिखें।

प्र.6. आपके अनुसार बूढ़ी औरत ने अपने बेटे की मृत्यु के दिन ख़रबूजे बेचकर सही किया या ग़लत? अपनी राय दें।

प्र.7. गीली मेड़ की **तरावट** में **विश्राम** करते हुए लड़के को साँप ने काट लिया।

रेखांकित शब्दों को इस तरह बदलें कि वाक्य का अर्थ न बदले।

प्र.8. इस कहानी से आपको क्या समझ आया, पाँच से छः वाक्यों में लिखें।

प्र.9. बूढ़ी औरत के लड़के की मृत्यु कैसे हुई थी?

(i) जंगल में घूमते समय साँप के काटने से। ☐

(ii) गीली मेढ़ की तरावट में विश्राम करते हुए साँप के काटने से। ☐

(iii) खरबूज़े बेचते हुए। ☐

प्र.10. इस पाठ से स्त्रीलिंग व पुल्लिंग शब्दों को ढूँढकर लिखें।

पुल्लिंग शब्द पहचानने के तरीक़े : जिन शब्दों के अंत में है आ, आव, पा, पन, न आते हैं वे शब्द पुल्लिंग होते हैं, जैसे– मोटा, चढ़ाव, बुढ़ापा, लड़कपन, लेनदेन आदि।

उसी तरह जिन शब्दों के अंत में ट, त या ई होता है वे स्त्रीलिंग कहलाती हैं जैसे – झंझट, आहट, चिकनाहट, सजावट, रात, बात, छत (मगर याद रहे कुछ अपवाद भी हैं जैसे– गीत, मीत, शख्त आदि। रोटी, टोपी, नदी, चिट्ठी, उदासी (यहाँ फिर से ध्यान देने की ज़रूरत है कुछ अपवाद हैं जैसे– दही, पानी, हाथी आदि)

धर्म की आड़

इस समय, देश में धर्म की धूम है। उत्पात किए जाते हैं, तो धर्म और ईमान के नाम पर, और ज़िद की जाती है, तो धर्म और ईमान के नाम पर। रमुआ और बुद्धू मियाँ धर्म और ईमान को जानें, या न जानें, परंतु उनके नाम पर उबल पड़ते हैं और जान लेने और जान देने के लिए तैयार हो जाते हैं।

देश के सभी शहरों का यही हाल है। उबल पड़नेवाले साधारण आदमी का इसमें केवल इतना ही दोष है कि वह कुछ भी नहीं समझता–बूझता, और दूसरे लोग उसे जिधर जोत देते हैं, उधर जुत जाता है। यथार्थ दोष है, कुछ चलते–पुरज़े, पढ़े–लिखे लोगों का, जो मूर्ख लोगों की शक्तियों और उत्साह का दुरुपयोग इसलिए कर रहे हैं कि इस प्रकार, जाहिलों के बल के आधार पर उनका नेतृत्व और बड़प्पन कायम रहे। इसके लिए धर्म और ईमान की बुराइयों से काम लेना उन्हें सबसे सुगम मालूम पड़ता है। सुग़म है भी।

साधारण से साधारण आदमी तक के दिल में यह बात अच्छी तरह बैठी हुई है कि धर्म और ईमान की रक्षा के लिए प्राण तक दे देना वाजिब है। बेचारा साधारण आदमी धर्म के तत्त्वों को क्या जाने? लकीर पीटते रहना ही वह अपना धर्म समझता है। उसकी इस अवस्था से चालाक लोग इस समय बहुत बेजा फ़ायदा उठा रहे हैं।

पाश्चात्य देशों में, धनी लोगों की, गरीब मज़दूरों की झोंपड़ी का मज़ाक उड़ाती हुई अट्टालिकाएँ आकाश से बातें करती हैं! गरीबों की कमाई ही से वे मोटे पड़ते हैं, और उसी के बल से, वे सदा इस बात का प्रयत्न करते हैं कि गरीब सदा चूसे जाते रहें। यह भयंकर अवस्था है! इसी के कारण, साम्यवाद, बोल्शेविज़्म आदि का जन्म हुआ?

– गणेशशंकर विद्यार्थी

धर्म की आड़

प्र.1. आजकल धर्म के नाम पर क्या–क्या हो रहा है?

प्र.2. हर आदमी के दिल दिमाग में कौन–सी बात बैठ चुकी है?

प्र.3. धर्म के नाम पर चालाक लोग कैसे आम आदमियों की किस अवस्था का फ़ायदा उठाते हैं?

प्र.4. आपके अनुसार धर्म की क्या परिभाषा होनी चाहिए?

प्र.5. धर्म के नाम पर किस प्रकार की मुश्किलें आती हैं? किसी एक मुश्किल के बारे में विस्तार से बताएँ।

प्र.6. इस कहानी के बारे में आपकी क्या राय है? अपने शब्दों में लिखें।

प्र.7. आप यदि अपने देश की कल्पना करें तो आप कैसा देश चाहेंगे?

प्र.8. धर्म के नाम पर होने वाली मुश्किलों को ख़त्म करने के लिए हमें क्या क़दम उठाने चाहिए?

प्र.9. इस पाठ के अंत के एक वाक्य में दो शब्दों का प्रयोग किया गया है – साम्यवाद और बोलशेविज़म। इन दोनों शब्दों के बारे में और जानकारी प्राप्त करें और लिखें।

प्र.10 ''रमुआ और बुद्धू मियाँ धर्म और ईमान को जाने या न जाने परन्तु उनके नाम पर उबल पड़ते हैं।'' इस वाक्य का अर्थ है।

(i) धर्म और ईमान के बारे में जाने बिना ही गुस्सा करना या लड़ने को तैयार होना। ☐

(ii) धर्म ईमान के नाम पर फूट डालाना। ☐

(iii) धर्म ईमान को लेकर झगड़ा करना। ☐

प्र.11. हम जब कहानी/पाठ पढ़ते हैं तो अक्सर ऐसे शब्द दिखाई देते हैं – गाँववाले, पढ़नेवाले, चायवाला, गाड़ीवाला आदि। ये 'वाला' या 'वाले' जैसे शब्दों को भाषा में कुछ कहते हैं? जी हाँ, इसे प्रत्यय कहते हैं। जो शब्दांश शब्दों के अंत में लगकर उनके अर्थ को बदल देते हैं वे प्रत्यय कहलाते हैं। क्या आप ऐसे कुछ शब्द सोचकर लिख सकते हैं?

निबंध लेखन

निबंध लेखन के कुछ चरण है जिन्हें इस्तमाल कर के हम अपना निबंध लेखन काफी बेहतर कर सकते हैं।

पहला चरण : जिस विषय पर लिखना है, उस विषय के अलग–अलग पहलू पर सोचें और अपने सभी विचारों को एक कागज़ पर उतार लें। इसका फायदा यह होगा कि आप सभी ज़रूरी जानकारी एक जगह एकत्रित कर लेंगे।

दूसरा चरण : सारी जानकारी एकत्र हो जाने के बाद उसे क्रमवार प्रस्तुत करना ज़रूरी है। निबंध/विषय की रूपरेखा बना लें– कि सबसे पहले क्या आएगा, उसके बाद, फिर बीच में क्या आएगा और निबंध का अंत कैसे होगा। ध्यान रखें कि ऊपर की बात उसके ठीक नीचे की बात से जुड़ी होनी चाहिए, जिससे विषय का क्रम बना रहे।

तीसरा चरण : निबंध के विषय को कुछ प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता हैः–

- विषय परिचय जिसे भूमिका या प्रस्तावना कहा जाता है।
- विषय विस्तार जिसमें विषय से संबंधित आवश्यक पहलू सूचना आदि दिए जाते है।
- उसके बाद विषय के पक्ष और विपक्ष में विचार, उपयोगिता, लाभ–हानि आदि लिखे जा सकते है।
- निबंध के अंत को निष्कर्ष या उपसंहार (Conclusion) कहा जाता है। यहाँ पर विषय को इस प्रकार समेटना कि वह पूर्ण लगे, ज़रूरी होता है।
- शुरूआत और अंत पर खास ध्यान दें : निबंध की शुरूआत महापुरूषों के अनमोल वचन से लेकर कविताएँ, शेरो–शायरी, प्रेरक प्रसंग, नवीनतम आंकड़े आदि से किया जा सकता है। आकर्षक शुरूआत अकसर पढ़ने वाले को लुभाता है।
- विषय को प्रामाणिक बनाने के उद्देश्य से अलग–अलग भाषाओं की सूक्तियाँ एवं उदाहरण भी बीच–बीच में दिया जा सकता है।
- इसी तरह अंत में भी कही गई कोई रोचक बात का खास असर होता हैं अंत में प्रभावशाली बात करना अनिवार्य है। सारे निबंध का सार/निष्कर्ष उपसंहार (Conclusion) में आ जाना चाहिए।

निबंध का नमूना

खानपान की बदलती तसवीर

पिछले दस–पंद्रह वर्षों में हमारी खानपान की संस्कृति में एक बड़ा बदलाव आया है। इडली–डोसा–बड़ा–साँभर–रसम अब केवल दक्षिण भारत तक सीमित नहीं है। ये उत्तर भारत के भी हर शहर में उपलब्ध हैं और अब तो उत्तर भारत की 'ढाबा' संस्कृति लगभग पूरे देश में फैल चुकी है। अब आप कहीं भी हों, उत्तर भारतीय रोटी–दाल–साग आपको मिल ही जाएँगे। 'फ़ास्ट फूड' (तुरंत भोजन) का चलन भी बड़े शहरों में खूब बढ़ा है। इस 'फ़ास्ट फूड' में बर्गर, नूडल्स जैसी कई चीज़ें शामिल हैं। एक ज़माने में कुछ ही लोगों तक सीमित 'चाइनीज़ नूडल्स' अब संभवतः किसी के लिए अजनबी नहीं रहे। प्रस्तावना

'टू मिनट्स नूडल्स' के पैकेट बंद रूप से तो कम–से–कम बच्चे–बूढ़े सभी परिचित हो चुके हैं। इसी तरह नमकीन के कई स्थानीय प्रकार अभी तक भले मौजूद हों, लेकिन आलू–चिप्स के कई विज्ञापित रूप तेज़ी से घर–घर में अपनी जगह बनाते जा रहे हैं।

गुजराती ढोकला–गठिया भी अब देश के कई हिस्सों में स्वाद लेकर खाएं जाते हैं और बंगाली मिठाइयों की केवल रसभरी चर्चा ही नहीं होती, वे कई शहरों में पहले की तुलना में अधिक उपलब्ध हैं। यानी स्थानीय व्यंजनों के साथ ही अब अन्य प्रदेशों के व्यंजन–पकवान भी प्रायः हर क्षेत्र में मिलते हैं और मध्यमवर्गीय जीवन में भोजन–विविधता अपनी जगह बना चुकी है।

कुछ चीज़े और भी हुई हैं। मसलन अंग्रेज़ी राज तक जो ब्रेड केवल साहबी ठिकानों तक सीमित थी वह कस्बों तक पहुँच चुकी हैं और नाश्ते के रूप में लाखों–करोड़ों भारतीय घरों में सेकी–तली जा रही हैं। खानपान की इस बदली हुई संस्कृति से सबसे अधिक प्रभावित नयी पीढ़ी हुई है, जो पहले के बारे में बहुत–कुछ जानती है। स्थानीय व्यंजन भी तो अब घटकर कुछ ही चीज़ों तक सीमित रह गए हैं। बंबई की पाव–भाजी और दिल्ली के छोले–कुलचों की दुनिया पहले की तुलना में बड़ी ज़रूत है, पर अन्य स्थानीय व्यंजनों की दुनिया में छोटी हुई है। जानकार ये भी बताते हैं कि मथुरा के पेड़ों और आगरा के पेठे–नमकीन में अब वह बात कहाँ रही। यानी जो चीज़ें बची भी हुई हैं, उनका गुणवत्ता में फ़र्क पड़ा है। फिर मौसम और ऋतुओं के अनुसार फलों–खाद्यान्नों से जो व्यंजन और पकवान बना करते थे, उन्हें बनाने की फुरसत भी अब कितने लोगों को रह गई है। अब गृहिणियों या कामकाजी महिलाओं के लिए खरबूज़े के बीच सुखाना–छीलना और फिर उनसे व्यंजन तैयार करना सचमुच दुःसाध्य है।

यानी हम पाते हैं कि एक ओर तो स्थानीय व्यंजनों में कमी आई है, दूसरी ओर वे ही देसी–विदेशी व्यंजन अपनाए जा रहे हैं, जिन्हें बनाने–पकाने में सुविधा हो। जटिल प्रक्रियाओं वाली चीज़ें तो कभी–कभार व्यंजन–पुस्तिकाओं के आधार पर तैयार की जाती है। अब शहरी जीवन में जो भागमभाग है, उसे देखते हुए यह स्थिति स्वाभाविक लगती है। फिर कमरतोड़ महँगाई ने भी लोगों को कई चीज़ों से धीरे–धीरे वंचित किया है। जिन व्यंजनों में बिना मेवों के स्वाद नहीं आता, उन्हें बनाने–पकाने के बारे में भला कौन चार बार नहीं सोचेगा!

खानपान की जो एक मिश्रित संस्कृति बनी है, इसके अपने सकारात्मक पक्ष भी हैं। गृहिणियों और कामकाजी महिलाओं को अब जल्दी तैयार हो जाने वाले विविध व्यंजनों की विधियाँ उपलब्ध है। नयी पीढ़ी को देश–विदेश के व्यंजनों को जानने का सुयोग मिला है–भले ही किन्हीं कारणों से और किन्हीं खास रूपों में (क्योंकि यह भी एक सच्चाई है कि ये विविध व्यंजन इन्हें निखालिस रूप में उपलब्ध नहीं हैं)।

आज़ादी के बाद उद्योग–धंधों, नौकरियों–तबादलों का जो एक नया विस्तार हुआ है, उसके कारण भी खानपान की चीज़ें किसी एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में पहुँची हैं। बड़े शहरों के मध्यमवर्गीय स्कूलों में जब दोपहर के 'टिफ़िन' के वक्त बच्चों के टिफ़िन–डिब्बे खुलते हैं तो उनसे विभिन्न प्रदेशों के व्यंजनों की एक खुशबू उठाती है।

हम खानपान से भी एक–दूसरे को जानते हैं। इस दृष्टि से देखें तो खानपान की नयी संस्कृति में हमें राष्ट्रीय एकता के लिए नए बीज भी मिल सकते हैं। बीज भलीभाँति तभी अंकुरित होंगे जब हम खानपान से जुड़ी हुई दूसरी चीज़ों की ओर भी ध्यान देंगे। मसलन हम उस बोली–बानी, भाषा–भूषा आदि को भी किसी–न–किसी रूप से ज़्यादा जानेंगे, जो किसी खानपान–विशेष से जुड़ी हुई हैं।

सकारात्मक बिन्दु

इसी के साथ ध्यान देने की बात यह है कि 'स्थानीय' व्यंजनों का पुनरुद्धार भी ज़रूरी है जिन्हें अब 'एथनिक' कहकर पुकारने का चलन बढ़ा है। ऐसे स्थानीय व्यंजन केवल पाँच सितारा होटलों के प्रचारार्थ नहीं छोड़ दिए

जाने चाहिए। पाँच सितारा होटलों में वे कभी–कभार मिलते रहें, पर घरों–बाज़ारों से गायब हो जाएँ तो यह एक दुर्भाग्य ही होगा। अच्छी तरह बनाई–पकाई गई पूड़ियाँ–कचौड़ियाँ–जलेबियाँ भी अब बाज़ारों से गायब हो रही हैं। मौसमी सब्जियों से भरे हुए समोसे भी अब कहाँ मिलते हैं? उत्तर भारत में उपलब्ध व्यंजनों की भी दुर्गति हो रही है।

अचरज नहीं कि पहले उत्तर भारत में जो चीज़ें गली–मुहल्लों की दुकानों में आम हुई करती थीं, उन्हें अब खास दुकानों में तालाशा जाता है। यह भी एक कड़वा सच है कि कई स्थानीय व्यंजनों को हमने तथाकथित आधुनिकता के चलते छोड़ दिया है और पश्चिम की नकल में बहुत सी ऐसी चीज़ें अपना ली हैं, जो स्वाद, स्वास्थ्य और सरसता के मामले में हमारे बहुत अनुकूल नहीं हैं।

हो यह भी रहा है कि खानपान की मिश्रित संस्कृति में हम कई बार चीज़ों का असली और अलग स्वाद नहीं ले पा रहे। अक्सर प्रीतिभोजों और पार्टियों में एक साथ ढेरों चीज़ें रख दी जाती हैं और उनका स्वाद गड्डमड्ड होता रहता है। खानपान की मिश्रित या विविध संस्कृति हमें कुछ चीज़ें चुनने का अवसर देती हैं, हम उसका लाभ प्रायः नहीं उठा रहे हैं। हम अकसर एक ही प्लेट में कई तरह के और कई बार तो बिलकुल विपरीत प्रकृति वाले व्यंजन परोस लेना चाहते हैं।

नकारात्मक बिन्दु

इसलिए खानपान की जो मिश्रित–विविध संस्कृति बनी है – और लग यही रहा है कि यही और अधिक विकसित होने वाली है – उसे तरह–तरह से जाँचते रहना ज़रूरी है।

उपसंहार

प्रयाग शुक्ल

निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखें :

I. पोलीथिन की समस्या

1. प्रस्तावना
2. सस्ता, बहु–उपयोगी उत्पाद
3. व्यापक प्रयोग
4. हानिकारक रासायनिक पदार्थों से निर्मित
5. उपसंहार

II. मेरी प्रिय पुस्तक

1. प्रस्तावना
2. प्रिय क्यों?
3. वर्णित विषय
4. प्रेरणादायक बिन्दु
5. उपसंहार